सत्यार्थ प्रकाश
प्रथम संस्करण
११-१२ समुल्लास (फोटोस्टेट)
1875 ई

गुरु विरजानन्द दण्डा
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक . 503
दयानन्द महिला मह

स्त्रीकेसाथरहे। औरउनकेगुरूनेआशिर्वाददिया कितुम्हारापुत्रब-
ड़ाश्रेष्ठहोगा सोउनकेभाषा ग्रन्थमेंऐसीबात लिखीहै सोमुझको
अनुमानसेमालूमपड़ताहैकितबउसनेकाशीमेंसंन्यासलिया फिर
खूबखानेपीनेलगे तब कामातुरहोके किसीस्त्रीमें फसगए फिर
जबकाशीमेंनिन्दाहोनेलगी तबकाशीछोड़केदक्षिणदेशमेंचलेगए
परन्तुकोईउनकेस्वजाति ब्राह्मणनेपंक्तिमंनहीलिया सोआजतक
तैलंगब्राह्मणोंकोऔरगोकुलस्थोंकोएकपंक्तिवाएकबिबाहनहीहो-
ताजोकोईतैलंग,ब्राह्मण,गोसांईजीकोकन्यादेताहै वहभीजातिबा
ह्यहोजाताहै फिरवेदोनों जहांतहां घूमनेलगे औरउनकाएक
पुत्रभया उसकानामवल्लभरक्खा इसविषयमें वेलोगऐसाकहतेंहैं
किजन्मसमयमेंही उसबालककोवनमेंछोड़के चलेगए सोउसबा-
लककी चारों ओर अग्नि जलतारहता था। इस्से उस बालक
कोकोईजानवरनहींमारसका जबवेपांचवर्षकेभए तबदिग्विजय
करनेलगे औरसबपृथिवीकेपंडितोंको उननेजीतलिया पांचवर-
षकीउमरमें सोयहबातहमको झूटमालुमदेतीहै क्योंकिवे बनमें
बालककोकभीनहींछोड़ेंगे तथाअग्निरक्षाभीनकरेंगा औरपांच
वर्षकीउमरमें विद्याकभीनहीहोसक्ती फिरवेक्या पराजयकरेंगे
यहबातअपनेसंप्रदायकीप्रतिष्ठाकेहेतुमिथ्यारचलिईहैक्योंकिसुबो
धिनीतथाविद्वन्मंडनसंस्कृतमेंग्रन्थउनकेबनायेदेखनेमेंआतेहैंउन
मेंउनकासाधारण पांडित्यहीदेखनेमेंआताहै इस्सेवेक्यापंडितों
कापराजयकरसकेंगे फिरवेऐसाकहतेहैं किश्रीकृष्णनेवल्लभजीसे
कहाकिहमारे जितनेदैवीजीवहैं उनकातुमउद्धारकरो फिरवल्ल
भजीफिरतेघूमतेमथुरामें आकेरहेऔरवहांसंप्रदायकाजालफै-
लायाकितनेकपुरुष उनकेचेलेभए औरउननेबिवाहकिया उस्से
सातपुत्रभए सोआजतकगोकुलस्थोंकी सातगद्दीचलतीहै फिरऐ-
सी२कथाप्रसिद्धकरनेलगे किजोकोईगोसांई जीकाचेलाहोगाव-
हीवैष्णवऔरदैवीजीवहै औरजोकोईउनकाचेला नहीहोतावह-

आसुर नाम दैत्य और राक्षस संज्ञक जीवहै ऐसीप्रसिद्धहोनेसे बहुतलोग चेलेहोगये औरबहुतव्यभिचार तथाविषयभोग केहेतु चेलेहोते हैं यहांतकउनने मिथ्याकथारचीहै किजब मथुरामें रहतेथतबवल्लभजीने एकचेलेसेकहाकितूंदहीमेरेलिये बाजारसेले आवहचेलादहीलेनेकेहेतु बजारमेंगया वहांएकदहीलेके बूढीस्त्री बैठीथी उस्सेउसनेकहाकी इसदहीकाक्यातूंमुल्यलेगी तबबुढ़ियाने जानाकियह बल्लभजीका चेलाहै उस्सेबोलीकिमैं इसदहीकेबदले मुक्तिलेऊंगी तबउसनेदहीलेलिया औरबुढियासे कहाकितुझको मैंनेमुक्तिदेदी सोउसबुढ़ियाकोमुक्तिहीहोगई औरबल्लभजीकाना मरक्खाहैमहाप्रभुसोऐसीरझूटकथाबनाकेजगत्कोठगलेतेहैं एक घासकीकण्ठीदेदेतेहैं उसकानामरक्खाहै पवित्रा औररोरीकीदो रेखाश्टङ्गकेतुल्य ललाटमेंबनवादेतेहैंफिरकहतेहैंकितुमगोसांई जीकेसमर्पणहोजा औरइस्से तुमारासबपापछुटजायगा तुमलोग दैवोजीव औरवैष्णवकहाओग इसलोकमेंआनन्दसेभोगकरोऔर मरनेकेपीछेतुमलोगगोलोकस्वर्गमें जावोगेजहां राधादिकसखी औरश्रीकृष्णनित्य रासमण्डल और आनन्दभोग कर्तेहैं वैसेतुम भींअनेकस्त्रीयोंकेसाथ आनन्दभोगकरोगे ऐसीकथाको सुनकेस्त्री औरपुरुषमोहित होकेचेलेहोजातेंहैं फिरएकऐसी मिथ्याकथा रचीहैं किविट्ठलसाक्षात् श्रीकृष्णकाअवतारहुआहै औरहमलोगसाक्षात् कृष्णकेस्वरूपहैं सोबहुत२ धनदेश्केधनाढ्यकीस्त्रीयां एकराचीं गोसांई जीकेसेवामें रहआतीहैं तबउनकेचेले औरचेलियांउसस्त्रीसेकहतीहैं कितूं बड़ीसौभाग्यवतीहै किगोसांईजीनेंतुझकोअंगसेलगालिया क्योंकि समर्पणकायहीप्रयोजनहै किगोसांई जीघरगीरधन औरउनके मनको चाहेंसोकरें उनचेले औरचेलियोंकाजबमरणहोताहै तबउनका धनसब गोसांईजी लेलेतेहैं क्योंकीपहिलेही समर्पणकियागयाथाबडेआनन्दकासंप्रदायउनकाहै किचेलचेलीनोकरचाकरसबविषयभोगआनन्दकेंसमुद्रमेंडूब

केमग्नहोजातेहैं औरगोसांईलोगखूबश्टङ्गारसेबनेठनेसदारहते हैंजिसेदेखकेसोलोगमोहितहोजांय सोरातदिनस्त्रीलोगघेरकेर-हतीहैं औरस्त्रीयोंकेअर्थातचेलियोंकेझुण्डकेझुण्ड२ क्रीडाकरते रहतेहैं क्योंकिगोसांईलोगअपनेकोकृष्णमानतेहैं औरउनकीचे-लियांअपनेकोराधारूपसखीमानतीहैंखबस्त्रीलोगधनदेतीहैंऔर अपनोइच्छापूर्वकक्रीडाकरतीहैं केवलवेबड़ेपामरहोजातेहैं इ-ससेपशुकीनांई अर्थात्लालसुखकेवांदरजैसेक्रीड़ाकरतेहैंवैसेवेभी पशुहैं इसमेंकुछसन्देहनहीं जितनेमन्दिरधारी,वैरागीहैं उन-काभीप्रायःऐसाहीव्यवहारहै एकचक्रांकितलोग जोकिआचारी कहातेहैं उनकाऐसामतहैकि।तापःपुंड्रंतथानाम मालामन्त्र-स्तथैवच। अमीहिपञ्चसंस्कारा परमैकान्तहेतवः॥ यह उनका श्लोकहै शंख,चक्र,गदाऔरपद्मलोहेचांदीवासोनेके चारचिन्हब-नारखतेहैं जोकोईउनकाचेला वाचेलीहोतीहैजबवेस्नानकरके आतेहैं तबबरोबर पंक्तिउनकीबैठजातीहै औरउनचिन्होंकोअग्नि मेंतपाके उनकेहाथकेमूलमेंतप्र२लगादेतेहैं उससमयजिसअग्नि मेंतपायाजाताहै उसकानामवेदीरक्खाहै जबउनकेहाथमेंतप्र२ वेलगातेहैं तबबड़ादुःखउनकोहोताहै क्योंकिचमड़े,लोम और मांसके जलनेसे उनकोबड़ीपीड़ाहोतीहै औरदुर्गन्धभीउठताहै फिरउनकेहाथमेंलगाके चमड़ा,मांस,उसमें कुछ२लगरहताहै औरएकपात्रमेंजलवादूधरखदेतेहैं उसमें उनचिन्होंको बुझादेत हैं फिरकोई२उसजल वा दूधकोपीलेतेहैं देखनाचाहिएयहबात कौनधर्म औरकिसयुक्तिकोहागी केवलमिथ्याहीजानना क्योंकि जीतेशरीरकोजलानेसे एकप्रथमसंस्कारमानतेहैं औरजितनसं-प्रदायवालेहैं वेउर्द्ध्वपुंड्रत्रिपुण्ड्रका संस्कारसबमानतेहैं उनसे शैव,वैष्णवादिक अपनेहृदयमें अभिमानकरतेहैं उर्द्ध्वपुण्ड्रवाले नारायणकेपगकीआकृतितिलककोमानतेहैं तथाशैवशाक्तादिक महादेवकेललाटमें जोचन्द्रहै उसकीआकृतिमानतेहैं फिरचक्रां

कितादिक बीचमें रेखाकरतेहैं उसकानामश्रीरखलियाहै इसमें
बिचारनाचाहिए किजिनकेललाटमें हरिकेपगकाचिन्ह लक्ष्मी
औरचन्द्रमाकाचिन्हहोवै तोवेदरिद्रदुःखीऔरज्वरादिकरोगउ-
नकोक्योंहोवैं फिर वेकहतेहैं किबिनातिलकसेचाण्डालकेतुल्यवह
मनुष्यहोताहै उनसेपूछनाचाहिएकिचाण्डालजोतुम्हारातिलक
लगाले तोतुम्हारेतुल्यहोसक्ताहैवानहीं जोवेकहेंकिहोसक्ताहै तो
गधावाकुत्तेकेललाटमें तिलकलगानेसे वहमनुष्यभी होजाताहै
वानहींसोतिलककाऐसासामर्थ्य नहींदेखपड़ताहैकिऔरकाऔ
रहोजाय औरलक्ष्मीचन्द्रइनके ललाटमें बिराजमानतोभीउदर
कापालननहोना कठिनदेखपड़ताहै इससे ऐसा निश्चयहोताहै कि
यहलक्ष्मीऔरचन्द्रमानहींहै किन्तु दरिद्राऔरउष्णताजाननी
चाहिए फिरवेतिलककेबिषयमें एकदृष्टान्तकहतेहैं किकोईमनुष्य
एकवृक्षकेनीचेसोताथा बड़ारोगीसोमरणसमय उसकाआगया
वृक्षकेऊपरएककौआबैठाथाउसनेबिष्टाकियासोगिरीउसकेललाट
केऊपर सोतिलककोनांईचिन्हहोगया फिरयमराजकेदूतउसको
लेनेकोआए तबतकनारायणनेअपनेभीदूतभेजदिए यमराजकेदू-
तोंनेकहाकियहबड़ापापीहै सोअपनेस्वामीकीआज्ञासेहमइसको
नरकमेंडालेंगे तबनारायणकेदूतबोलेकि हमारेस्वामीकीआज्ञा
है किइसकोवैकुण्ठमेंलेआओ देखोतुमअन्धेहोगए इसकेललाट
मेंतिलकहै तुमकैसेलेजासकोगे सोयमराजकेदूतोंकीबातनहींच-
ली औरउसकोवैकुण्ठमेंलेगए नारायणनेबड़ीप्रीतिसेप्रतिष्ठाकि-
या औरउससे कहातूंआनन्दकर वैकुण्ठमें ऐसे२प्रमाणोंसेतिलक
कोसिद्धकरतेहैं औरलोगमानतेहैं यहबड़ाआश्चर्यहै क्योंकिऐसी
मिथ्याकथाकोलोगमानलेतेहैं गोकुलस्थलोगकेवलहरिपदाकृति
हीकोतिलकमानतेहैंनिम्बार्कसम्प्रदायकेएककालाबिन्दु तिलकके
बीचमेंदेदेतेहैं उसकोजैसेमन्दिरमेंश्रीकृष्णबैठाहोय ऐसामान-
तेहैं तथामाध्वार्कसंप्रदायवाले एककालीरेखाखड़ीललाटमेंकरते

हैं उसको भी ऐसा मानते हैं तथा चैतन्यसंप्रदाय में जो हैं वे कटार के ऐसा चिन्ह को हरिपदाकृति मानते हैं और राधावल्लभी भी बिन्दु को राधावत् मानते हैं कबीर के सम्प्रदायवाले दीपकी शिखावत् तिलक को मानते हैं और पण्डितलोग पिप्पलकपत्ते को नांई कोई २ तिलक करते हैं सो केवल मिथ्याकल्पना लोगों ने बनाई है जो तिलक के बिना चाण्डाल होता होतो वे भी चाण्डाल होजांय क्योंकि जब स्नान और मुख्य प्रक्षालन करते हैं तब तो उनके भी ललाट में तिलक नहीं रहने पाता फिर वे चाण्डाल क्यों न बन जांय और जो फिर तिलक के करने से उत्तम बनजांय तो चाण्डाल उत्तम बनने में क्या देर परन्तु चक्रांकितों के ग्रन्थ मन्त्रार्थदिव्यसूर्य, रत्नप्रभा और नाभा ने बनाई भक्तमालादिकों में यह प्रसिद्ध लिखा है कि जो चक्रांकितों का मूल आचार्य शठकोप जी सो कंजर और रामानुज डाकेकुल में उत्पन्न भए थे सोई उन ग्रंथों में लिखा है कि विक्रीयशूर्पं विचचार योगी । यह वचन है इसका इस से यह अभिप्राय है कि सूप को बेचके योगी जो शठकोप सो बिचरते भए इस से क्या आया कि वह सूप बनाने वाले के कुल में उत्पन्न भया था उनहीं ने चक्रांकित संप्रदाय का प्रारम्भ किया इस उसका टोपचक्रांकित आजतक पूजते हैं उनके पीछे दूसरा उनका आचार्य मुनिवाहन भया उसको ऐसी कथा उन ग्रंथों में है कि दक्षिण में एक तोताद्री और रङ्गजो दो स्थान हैं उनमें बहुत से उनके संप्रदाय के साधु आजतक रहते हैं वहां एक चांडाल था उसको ऐसी इच्छा थी कि मैं भी कुछ ठाकुरजी का परिचर्या करूं परन्तु मन्दिर में झाडू बहारू देने के हेतु पुजारी लोग उसको नहीं आने देते थे सो जब प्रातःकाल कुछ रात्रि रहै तब पुजारी लोग स्नानको दरवाजा खोलके चले जांय तब वह चांडाल छिपके मन्दिर में झाडू देके निकल जाय कोई उसको देखे नहीं परन्तु पुजारियों ने बिचार किया कि झाडू कौन दे जाता है रात में छिपके दो चार पुजारी बैठे रहे कि उसको पकडना चाहिए जब प्रातःकाल और पुजारी स्नान को चले गये तब वह चांडाल मन्दिर में घुसके झाडू देने लगा जब उनने दे

खातनपकडके ऐसामाराकि मूर्छितहोगया तबउनवैरागियोंनेप कडकेमंदिरकेबाहरउसको डालदियाजबवस्नानकरकेपुजारीलो-गआकेठाकुरका किवाडखोलनेलगें सोनखुलाक्योंकि ठाकुरजी नेउसकोमारनेमे बडाक्रोधकिया तबबडेआश्चर्यभये सबकिकिवा-डक्योंनहीखुलतेहैं फिरएक वैरागीको ठाकुरजीने स्वप्नदियाकि किवाडीतबखुलेगो आपसबलोग उसचांडालको पालकोमे बैठाके अपनेकंधेपर सबनगरमेंउसको फिरा ओऔरपा लकीसहितमं-दिरकोपरिक्रमाकरो फिरउस कोमंदिरमें लेआओ वहीमेरीपू-जाकरै औरइस मंदिरका अधिष्टाताऔर सबकागुरु बनैजबवह किवाडकोआके स्पर्शकरेगा तबकिवाड खुलेगा अन्यथानहीऐ-साहीउननेकिया औरसबबातहोगई उसकानाम उसदिनसेमु-निबाहन रक्खागया क्योंकिमुनिजोवैरागी उननेबाहननामपा-लकोउठाई इस्सेउसकानाम मुनिबाहनपडा उनका चेलाएकमु-सलमानभया उसकानाम् यावनाचार्यइसकोअब चक्रांकितोंने-तिकयामुनचार्य्य नामरक्खाहै उनके चेला रामानुजभये वहब्रा-म्हणथेरामानुज के विषयमेंयेलोगकहतेहैं किशेषजी काअवतार-हैशंकराचार्य शिवका निबार्कमाधव रामानन्द औरनित्यानन्द येचारों सनकादिकके अवतारहैं नानकजनकजी काअवतारहै कबीरब्रम्हका यहबातसब उनकोमिथ्याहै क्योंकिअपने२संप्रदाय केहेतुमिथ्याकथा लोगोनेरचलिईहैं तोसरासंस्कारमालाधार-णकरनाउसमें रुद्राक्षतुलसी घासकमलगट्टे इत्यादिकजानलेना इसविषयमेंसंप्रदायो लोगकहते हैंकिबिनामाला काठीऔररुद्रा क्षकेधारणसेजल पीयेऔरभोजनकरै सोमद्यपान औरगोमांस-केतुल्यहैइनसे पूछनाचाहिये किनशाक्योंनहीहोताऔरमांसका स्वादक्यों नहीआता इस्सेयहबात केवलमिथ्या आजीविकाकेहे-तुलोगोनेरचलिईहैं इनमेंश्लोकभी बनारक्खे हैंयस्यांगेनास्तिरु-द्राक्षएकोपि बहुपुण्यदः ।। तस्यजन्मनिरर्थं स्यात्त्रिपुंड्ररहितंयदि

इत्यादिकश्लोकशिवपुराण औरदेवीभागवतादिक ग्रन्थोंमेंशैवऔरशाक्तोंनेअपनेसंप्रदायोंकेबढनेकेहेतु लिखेहैं औरवैष्णवादिकोंके खंडनकेहेतुव्यासादिकों केनाममें बहुतश्लोक रचरक्खे हैं काष्ठमालाधरस्सैवमद्यश्चांडालउच्यतेउर्द्ध्व पुंड्रधरस्सैव विनाशंव्रजतिध्रुवम् इनकेविरुद्धइत्यादिक वैष्णवोंनेबनायाहैरुद्राक्षधारणेनैवनरकंप्राप्नुयाद्ध्रुवम् शालग्रामसहस्राणांशिवलिंग शतस्यच द्वादशकोटित्रिप्राणांततफलंश्वपचवैष्णवे ॥ विप्राद्द्विषड्गुण युतादरविंदनाभपादारविंदविमुखाच्छ्वपच । वरिष्ठम्अभाग्यतस्य देशस्यतुलसीयच नास्तिवै ।। अभाग्यंतच्छरीरस्यतुलसीयचनास्तिहि ।। दोनोंकेविरोधीवाममार्गीआएप्रवृत्तेभैरवीचक्रे सर्वेवर्णा द्विजातयः। निवृत्तेभैरवीचक्रेसर्वेवर्णाः पृथक्पृथक् ॥ मद्यमांसंचमीनंचमुद्रामैथुनमेवच। एतेपंचमकाराश्चमोक्षदाहियुगेयुगे । पीत्वापीत्वापुनःपीत्वा यावत्पतति भूतले ।उत्थायचपुनः पीत्वापुनर्जन्मनविद्यते ।सहस्रभगदर्शनान्मुक्तिर्नीचकार्याविचारणा ।मातृयोनिंपरित्यज्यविहरेत्सर्वयोनिषुकाश्यांहिमरणान्मुक्ति र्नीचकार्याविचारणा । काश्यांमरणान्मुक्तिःयहश्रुतिशैवोंनेबनालिईहैसहस्रभगदर्शनान्मुक्तियहशाक्तोंनेश्रुतिबनालिईहै गंगागंगेतियोब्रूयाद्योजनानांशतैरपि।मुच्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति ।। अश्वमेधसहस्राणांवाजपेयशतस्यच । कन्याकोटिसहस्राणांफलंप्राप्नोतिमानवः।।यहएकादश्यादिकव्रतोंकामाहात्म्यबनालियाहैऐसेहीशालिग्राममनर्मदालिंगआदिकामहात्म्यबनालियाहैसोइसप्रकारकेमिथ्या२जालअपनेमतलबकेहेतुलोगोंनेबनालियेहैं औरपरस्परएककोएकदेखकेजलतेहैंतथाअत्यन्तविरोधऔर परस्परनिन्दाहोताहैक्योंकिजोमिथ्या२कल्पनाहै उनकोएकतोकभी नहीहोतीजो सत्यबातहैसोसबकेबीचमेंएकहोहै चक्रांकितादिकोंने अपनेसंप्रदायकेमन्त्रबनालिए हैं।ओन्नमोनारायणाय ओम्श्रीमन्नारायण चरणंशरणंप्रपद्ये श्रीमतनारायणायनमः दोनोंचक्रांकितोंके मन्त्रहैं ओम्नमोभग

वतेवासुदेवाय ओम्कृष्णायनमः ओम्राधाकृष्णो भ्योन्नमः ओम् गोविन्दायनमः ओम्राधावल्लभायनमः येनिंबार्कादिकोंकेमन्त्रहैं ओम्रामायनमः ओम्सीता रामाभ्यान्नमः ओम्रामायनमः येरामोपासकोंकेमन्त्रहैं ओम्नृसिंहायनमः ओम्हनुमतेनमः येखाखोआदि कोंकेमंत्रहैं ओम्नमः शिवाययहशैवोंकामन्त्र है ऐंह्रींक्लींचामुंडायैविच्चे ओंम्ह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः बगलामुख्यै फट्स्वाहाइत्यादिकवाममार्गियोंकेमन्त्रहैं सत्यनाम जपयहीकबीरसंप्रदायकामन्त्रहै दादूरामयहदादूसंप्रदायकामन्त्रहै रामरामयहरामसनेही सम्प्रदायकामन्त्रहै वाहगुरु॥ एकओंकारसत्यनामकर्त्तापुरुषनिर्भयनिर्वैर अकालमूर्त्तअयोनीसहभंगगुरुप्रसादजप॥ यहनानकसंप्रदायकामन्त्रहैं इत्यादिक कहांतकहमजाल गिनावैंकि लाखहां प्रकारके मिथ्याकल्पना लोगोनेकरलियेहैं येसवगायत्री जोपरमेश्वरकामन्त्रइसके छोडानेकेवास्तेधूर्त्तालोगोनेसबरचीहै औरजैसे गडेरियाअपने भेडऔरछेरियोंकोचराताहैउनमेसेजबचाहै तबदूधदूहलेताहै अपनामतलबसिद्धकरलेताहैदूधकेउनमेंसे एकभेडवाछेरीकोलेले अथवा भागजायतबउस गडरियेकोबडादुःखहोताहै सोदिनसमरचराके एकस्थानमेंइकट्ठाकरदेताहैवहचाहताहैइसभुंडमेंसे एकभीपृथक्नहोजायकिन्तु अन्यभेडवाछेरीमिलाकेबढायाचाहताहै क्योंकि उनसेहीउसकीआजीविकाचलतीहै वैसेहीआजकाल मूर्खमनुष्योंकोधूर्त्त गुरुलोगजालमेंबांधकेअत्यन्त धनादिकलूटतेहैं औरबडे२ अनर्थकरतेहैं क्योंकिचेले मूर्खहैंइससे जैसावेकहदेतेहैंवैसाहीमानलेतेहैं जोउनगुरुओंकोविद्याऔर बुद्धिहो।तोतो ऐसी अपनेवास्तेनरककीसामग्रीक्योंकरतेतथा चेलेलोगोंकों विद्याऔरबुद्धिहोतीतो इनधूर्त्तोंकेजालमेंफसकेक्यों नष्टहोतेदेखनाचाहिये किनानकजोकबोरजो औरदादूजी इनकेसंप्रदायमें पाषाणादिकमूर्त्ति पूजनतोनहींहै परन्तु उनमेंभीसंसारका धनादिकहरनेके वास्ते ग्रन्थसाहबकीउ

स्से भीअधिकपूजाकर्त्ते हैं यहभीएकमूर्त्तिपूजनहीहै पुस्तकभीजडहोताहैक्योंकिजैसी पाषाणादिकोंकी पूजावैसी पुस्तकोंकीभीपूजाजाननीइसमें कुछभेदनहींयहकेवलपरपदार्थ हरनेकेवास्ते ही लोगोनेयुक्तिरचलिईहै अपने२संप्रदायमें ऐसाआग्रहहैउनकोकि वेदादिकसत्यपुस्तकोंकी ऐसीपूजा बाउनमेंप्रीति कभीनहीकर्तेजैसीकीअपने भाषापुस्तकों मेंप्रीतिकरतेहैं औरसंन्यासियोंनेएकशंकरदिग्विजयरचलियाहै उसमेंबहुत २मिथ्याकथारक्खीहैउसमें दण्डीलोगऔर गिरीपुरी आदिकगोसांईलोग अत्यन्तप्रीतिकरते हैंअर्थात्रामानुजदिग्विजय निंबार्कदिग्विजय माधवार्कदिग्विजयवल्लभदिग्विजयकबीर दिग्विजयऔरनानक दिग्विजयादिकअपनो२बडाईकेवास्ते लोगोने मिथ्या२जाल रचलियेहैं शंकराचार्य कोईसंप्रदायकेपुरुष नहीथेकिन्तु वेदोक्तचार आश्रमोंकेबीचसंन्यासाश्रममेंथेपरन्तु उनकेविषयमेंलोगोंने संप्रदायकोनांई व्यवहार कररक्खाहै दशनामलोगोंनें पीछेमेकल्पित करलियेहैं जैसेकि किसीकानामदेवदत्तहोय इसके अन्तमेंदश प्रकारके शब्दरखतेहै किदेवदत्ताश्रमएक १ देवदत्तार्थतीर्थ २देवदत्तानन्दसरस्वतीऔरइसीकाभेददूसरा किदेवत्तेन्द्रसरस्वती ३ देवदत्तगिरी ४देवदत्तपुरी ५ देवदत्तपर्वतदेवदत्तसागर ७ देवदत्तारण्य ८ देवदत्तवन ९ देवदत्तभारती १० यदशनामरचलियेहैं फिरइनमेंशृंगेरीशारदाभूगोवर्द्धन औरज्योतिमठये चारप्रकारकेमठमानतेहैंऔरदण्डियोने दामोदरनृसंह नारायणइत्यादि कदण्डोंकेनामरखलियेहैं उसमेंयज्ञोपवीतबांधतेहैं उसकानामशंखमुद्रादिक रक्खाहैऐसो२बहुत कल्पनादण्डियोंनेभीकिईहै किन्तु जोबाल्यवस्थामेंनामरहताथा सोईसबआश्रमोंमेरहताथा जैसीकिजैगीषव्यआसुरिपंचशिखाऔरबोध्यऐसे २ नाम संन्यासियोंकेमहाभारतमेंलिखेहैंइससे जानाजाताहै कियहपीछेसे मिथ्याकल्पनादण्डलोगोनेकरलियाहैपरन्तुदण्डी लोगसनातनसंन्यासाश्रमीहैंक्यों

किमनुस्मृत्यादिकमेंइनका व्याख्यानदेखनेमेंआताहै औरगोसांई लोगोंने भीदुर्गानाथ इत्यादिकमठो शब्दकल्पित करलियाहै जैसे किवैरागीआदिकोंने नारायणदासइस्से बडा भारीबिगाडभया कि नीचऔर उत्तमकी परीक्षाहीनंहीहोती क्योंकिसब काएकसा हीनामदेख पडताहैतथा पुंड्र नाममाला औरमन्त्रयेपंचसंस्कार चक्रांकितादिकमानतेहैं औरमोक्षहोना भी इनसे मानतेहैंपरन्तु इसमेंबिचार करनाचाहिए किसंस्कारनामहै पवित्रताकासो पवित्रतादोप्रकार कीहोतीहैएकमन कोदूसरीबाह्यपदार्थोंकोइनमेंसे मनकीपवित्र ताहोनेसे बाह्यपवित्रता भीहोतीहै जिनका मनअधर्मकरने मेंरहताहै उनकोबाह्यपवित्र तासबव्यर्थहैसोउन संस्कारोंसेमनकोपवित्रताकुछनहींहोसक्ती देखनाचाहिएकिगोकुलस्थोंकेमन्दिरोंमें रोटीऔरदालतकलोगबेचतेहैं औरबाहर सेप्रसिद्धरखतेहैं किठाकुरकोइतनाबड़ा भोगलगताहै सोजितने नौकरचाकरमन्दिरोंमेंरहतेहैं उनकोमासिकधननहींदेतेकिन्तु इसकेबदलेपक्वान्न रोटीदालतकदेतेहैं उनकेहाथगोसांईजीअन्नबेचतेहैं औरवेप्रजाके हाथबेचतेहैं जैसेहलवाईकेदुकानमें बेचाजाताहै औरप्रसादभी उनकेयहां भेजतेहैं सबमन्दिरधारी किजिस्से कुछप्राप्तिहोतीहो मन्दिरोंमेंजब दर्शनकेहेतुजातेहैं तब जोउनकेस्त्रीवापुरुष,सेवक तथाधनदेनेवाले उनकावडासत्कारकरतेहैं अन्यकानहीं इनमिथ्याव्यवहारोंकेहोनेसेदेशकाबड़ाअनुपकार होताहैक्योंकिबाहरसेतोमहात्माकीनांईबनेरहतेहैंकुलऔरहृदयमेंकपट,काम,क्रोध,लोभादिकदोषबढ़तेचलेजातेहैं देखनाचाहिएकिबड़े२मन्दिर,मठ,गांव,राज्यदुकानदारीकरतेहैं औरनामरखतेहैंवैष्णव,आचारी,उदासी,निर्मलगोसांई जटाजूटबने रहते हैंतिलक,छापा,माला, ऊपरसेधाररखतेहैं औरउनकाहृदयका व्यवहारहमलोगदेखतेहैंबिद्याकालेशनहींबातभीयथावत्कहना वासुननानहींजानें इस्से सबमनुष्योंकोएकसत्य,धर्मबिद्यादिकगु-

णग्रहणकरनाचाहिए औरइननष्टव्यवहारोंको छोड़ना चाहिए तभीसबमनुष्योंका परस्परउपकारहोसक्ताहै अन्यथानहीं बाममार्गीलोग एकभैरवीचक्ररचतेहैं उसमेंएकनङ्गीस्त्री करकेउसके हाथमेंछूरीवातलवारदेदेतेहैं औरबीचमेंएकआसन केऊपरबैठा देतेहैं फिरउसस्त्रीकी पूजाकर्तेहैं यहांतकगुप्तअंगकीभीफिरउस जलको सबलोगपीतेहैं औरउसस्त्रीकोमानतेहैं कियहसाक्षातदेवीहै औरब्राह्मणसेलेकेऔरचमारतक उसस्थानमेंसबबैठतेहैं फिरएकपात्रमेंमद्यकोपूजाकरके मद्यरखतेहैं उसीएकपात्रसेसबहस्त्री पीतीहै फिरउसीजूठेंपात्रसे सबलोगमद्यपीतेहैं औरमांसभीखाते जातेहैं रोटीऔरबरेखातेजातेहैं फिरजबमद्यपीकेमस्तहोजाते हैं तबउसीस्त्रीसेभोगकरतेहैं जिसको किपहिलेदेवीमानीथी और नमस्कारकियाथा औरमनुष्यकाबलिदानभीकरतेहैं कोई२उस काभीमांसखातेहैंमुरदेकेऊपरबैठके जपकरतेहैं औरस्त्रीकेसमागमकेसमयजपकरतेहैं। योन्यांलिंगंसमा स्थाप्यजपेनमन्त्रमतन्द्रितः।औरयहभीउनकामन्त्रहै किएकमाताकोछोड़केकोईस्त्रीअगम्य नहीं फिरउनमेंसेएकमातङ्गीविद्यावालाहै वहऐसाकहताहै कि मातरंमपिनत्यजे त्‌माताकोभीनहींछोड़नाचाहिए क्योंकिमातङ्गहस्तीकानामहै सोमाताकोभी नहींछोड़ता वैसेवेभीमानते हैं ऐसीदशमहाविद्याउनलोगोंनेबनारक्खीहै उनमेंसेएकचोली मार्गहै उसकाऐसामतहै किस्त्रीऔरपुरुष सबएकस्थानमें रात्रि कोइकट्ठे होतेहैं एकबड़ाभारीमृतिकाकाघड़ावहांरखतेहैं उसमें सबस्त्रीलोगअपनेहृदयकावस्त्रअर्थातजिसकानामचोलीहै उसकाउसघड़ेमेंडालदेतीहैंफिरउनवस्त्रोंकोघड़ेकेबीचमेंमिलादेतेहैं फिर खूबमद्यपीतेहैंऔरमांसखातेहैं जबवेबड़ेउन्मत्तहोजातेहैंफिरउसघड़ेमेंहाथडालतेहैं जिसकेहाथमेंजिसकावस्त्रआवैवहउसकी स्त्रीहोतीहैवहमाता,कन्या,भगिनीवापुत्रकीभीस्त्रीहोयऐसे २ मिथ्याव्यवहारकर्तेहैं औरमानतेहैंकिमुक्तिहोययहबड़ाआश्चर्यहै ऐ-

सेकर्मों सेकभीनहींमुक्तिहोसो परन्तु विद्याहीनजोपुरुषहैं वेऐसे२ जालोंमेंफसजातेहैं औरइनलोगोंनेअपने२ मतकेपुष्टिकेहेतुअनेंकपाराशर्यादिकस्मृतिब्रह्मवैवर्त्तादिकपुराणतन्त्र उपपुराणपरस्परविरुद्ध ऋषिऔरमुनियोंके नामोंसे रचलिएहैं एककादूसरा अपमानकर्ताहै अपनीर अपनी२पुष्टिकेहेतु क्योंकिअसत्यबातऔरभ्रमजो होताहै सोपरस्पर विरुद्धसेहीहोताहै औरजो सत्यबातहै सोसब केहेतु एकहीहै जोसज्जनहोतेहैं वेसदाश्रेष्ठ कर्महीकरतेहैं क्योंकि वेसत्यासत्यबिचारसे असत्यकोछोड़देतेहैं औरसत्यको ग्रहणकरतेहैं औरकिसीकेजालमें विचारवान्पुरुष नहींफसतासबकेउपकार मेंहोउसकाचित्त रहताहैऐसेजोमनुष्यहैं वेधन्यहैं इसमें क्याआया किश्रेष्ठगृहस्थवाविरक्तजोहैं वेसदाश्रेष्ठकर्मही करतेहैंश्रेष्ठनहीइसवास्ते येविरक्तलोग अपनेमतसबमेंफसके सत्यासत्यनहीजानसक्तेहैं क्योंकिउनकोभ्रम अंधकारमेंकुछनही सूझता॥ अजगन्नाथादिकमेंबहुतचमत्कारदेखपड़ताहै तथानानाप्रकारकेतीर्थजोगंगादिकवेपापनाशकऔर मुक्तिप्रदहैंवानहीं उत्तर नहीक्योंकिजगन्नाथकीमूर्तिचंदनवा निंबकाष्टकीबनातेहैंउसकोनाभिमेंघोलरखतेहैंउसमें सोनेकेसंपुटमें एकशालग्राम रखकेधरदेतेहैंउसको ब्रह्मतेजमानतेहैंफिरआ भूषणवस्त्र पहिरादेतेहैं उसमेंकुछचमत कारनहीहै किन्तुपुजारियोंनेआजीविका केवास्तेबातऔरमहात्म्यकापुस्तकबनालियाहैवेएकतोयह चमत्कारकहतेहैंकिछत्तीस वर्षमेंचोलाबदलताहै सोवा इसको झूठमालूमदेतीहै क्योंकि ३६ वर्षमेंमूर्ति पुरानीहोजातीहै फिरदूसरीबना केरख देतेहैंऔर कृष्णतथाबलदेवको मूर्तिकेबीचमेंसुभद्राकी मूर्तिबनारखीहैइसमें बिचारनाचाहिये किएककेवामभाग दूसरेके दहिने भागमेंमूर्ति रखनाधर्मशास्त्रऔरयुक्तिसे विरुद्धहैऔरदूसरा चमत्कारयहकहतेहैंकिएकराजाबढ़ईऔर पण्डायेतीनोंउसीसमयमरजातेहैंयह बातउनकोमिथ्याहै क्योंकिअकस्मात्कोईउसदिन मरगयाहोगा

अथवाशत्रुलोगों नेविषदानदेकेकभी मारडालेहोंगे सोमाहात्म्य
कोऐसीबातलोगोंने मिथ्याबनालियाहैतीसराचमत्कारयहकहते
हैंकिआपसेआपही रथचलताहैयहभी उनकीबात मिथ्याहै क्यों-
किहजारहांमनुष्यमिलके रथकोखींचतेहैं औरकारीगरलोगोने
इसरथमेंकलाबनारक्खीहैं उनकेउलटेघुमानेसे वहरथखडाहोजा
ताहोगाऔरसूधे घुमानेसेकुछ चलता होगाजैसेकिघडी आदिक
केयन्त्रघूमतेहैंऐसे बहुतपदार्थविद्यासेहोतेहैं चौथाचमत्कारय-
हकहतेहैंकिएक चूल्हेकेऊपर सातपाचधर देतेहैंउनमेंसेऊपरके
पात्रोंकाचावलपहिले चुरजातेहैं यहभीउनकीबात मिथ्याहैक्यों-
किउनपात्रोंमेंचावलपहिले चुरालेतेहैंफिरउसके पेंदेकोमांजदे-
तेहैंफिरऊपर २ पाचरखदेतेहैंऔर नीचकेचूल्हेमें थोडीसीआंच
लगादेतेहैंफिरदरवाजा खोलदेतेहैंऔरअच्छे२ धनाढ्यतथारा-
जालोगोंकोंदूरसेकरकुछ २ निकालकेदेखादेतेहैं औरकहतेहैंकि
देखिएमहाराजकैसा चमत्कारहैकिनचिका अबतकचावलकच्चा
हैक्योंकिउसपात्रमें चावल अग्निपरपीछे धरेहैं उस कोदेखकेंबि
चाररहितपुरुषमोहितहोके बडाआश्चर्यगिनतेहैं औरहजारहां
रुपैयादेदेतेहैं यहकेवलउनमनुष्योंकी धूर्त्ततहै औरचमत्कारकु-
चनहींहैपांचवाचमत्कार यहकहतेहैंकिजोपापीहोय उसकोउस
मूर्तिकादर्शनन्हीहोतायहभी उनकीबातमिथ्याहै क्योंकिकिसीके
नेत्रमेंदोषहोनेसेआंखकेसामनेतिमिरआजातेहैंऔरवेपुजारीलो-
गऐसीयुक्तिरचतेहैंकि वस्त्रकेअन्यथा रूपकरकेपरदेबना रक्खेहैं
उनकेदोनोंओरपुजारी लोगखडेरहतेहैं औरफिरते भीरहतेहैं
सोकिसीप्रकारसेउसमूर्तिकाआडकरदेतेहैंफिरनहींदेखपडतीउ-
सवक्तऐसाबेकहतेहैंकि तुमलोगपापीहो जबतुम्हारापाप बटजाय
गातबतुमकोदर्शहोगातबवबुद्धिहीनपुरुषझट२ रुपैयेधरदेतेहैंफि
रउनकोदर्शनकरादेतेहैंयहसबमनुष्योंकी धूर्त्तताहैचमत्कारकुछ
नहीहैछटवायहचमत्कारकहतेहैंकिअन्धाबाकुष्टीहोजाताहैजोकि

वहांकाप्रसादनहीखातायहभीउनकीबातमिथ्याहैक्योंकि इसबात मेकभीकोईकुष्टीवा अंधानहीं होसक्ताहै बिनारोगसेऔर अनेक दिनकासडासड़ायाअन्न तथापचावलों और हंडियों केखपरे जिन को कौवे कुत्ते चमारऔर चांडालदिकस्पर्शकरतेहैंऔरभूरभोलग जातीहै सबकाउच्छिष्टखानेमे कुछरोगभी होसक्ताहै औरपरस्पर सबकाजूठसबखातेहैं औरफिर अन्यजनोंकेकिसीकाजलवाअन्न- होखातेयह देखनाचाहियेकि इनकाआश्चर्यव्यवहारकिएकबकास- बजूठखातेभीहैं फिरकहतेहैंकिहमकिसीकानहींखातेयहकेवलइ- नकाअविचारहीहै सोजिनकीवहां आजीविकाहै वेऐसी२ मिथ्या बातसदा रचतेरहतेहैं कलिकत्तामें एकमृत्तिकाकीमूर्त्ति बनार- क्खीहैउसकानामरक्खाहै कालीवहांभीऐसी २मिथ्या २ जालर- चरक्खीहैं किकालीमद्यपीतीहै औरमांसखातीहैसोवहजडमूर्त्ति क्यापीयेगीऔर क्याखावेगी परन्तु उनपुजारियोंको खूबमद्यपीने औरमांसखानेमें आताहै वेंलोगस्वादकेहेतुऔर धनहरणकेहेतु नाना प्रकारकोझूठ २ बातबनालेतेहैं वहांएकमंदिर में पाषाण कालिंग स्थापन कररक्खाहै उसकानामतारकेश्वर रक्खाहै इस- विषयमेंउनोंनेबातबनारक्खीहैकिरोगियोंकोंस्वप्नावस्थामें महादे- वऔषधबताजातेहैं उस औषधसे उनकारोगछूटजाताहै यहबात उनकोमिथ्याहैक्योंकिउनकाजोपुजारीहै वही वैद्यऔरडाकतरों- की औषधीकियाकर्त्ताहै औरऐसीऔषधि क्योंनहो स्वप्नावस्था मेंमहादेवकहदेताहै किजिसकेखानेसेकिसीकोकभी रोगहीनहो- इसेयहबात झूठहै किवहपाषाण क्याकहवा सुनसक्ताहैकभीन- हीं सेतबन्धरामेश्वरकेविषयमें ऐसालोगकहतेहैं कि जबगंगाजल चढातेहैंतबवहलिंगबढजाताहै यहबातमिथ्याहै क्योंकिउसमंदि- रमेंदिवसकोभीअंधकाररहताहै उसीसेचारकोनेमें चारदीपसदा जलतेरहतेहैंउसमंदिरमें किसीकोघुसनेदेते नहीं उनकेहाथसेगंगा जललेके उसमूर्त्ति केऊपर जलचढाताहै जबवह पुजारीनीपेसे-

ऊपरहाथकरताहैतबमूर्त्तिमेंलेकरहाथतक गंगाजीकीएकधाराब-नजातीहै उसधारामेंचारोंदीपकेप्रकाशकेपड़नेमे जलबिजलीको नांईचमकताहैतबउनयाचियोंकोपुजारीलोग कहतेहैंकितुमलो-गों केऊपर महादेवकीबडीकृपाहै देखोमहादेव कालिंगबढगया सोतुमरूपैयेचढाओ ऐसेबहकार२केखूबधन हरण करतेहैंऔर क-हतेहैंकिरामनेयहमूर्तिस्थापनकिईहै सोयहबातमिथ्याहीहै क्यों-किवाल्मीकीयरामायणमेंउसकानामभीनहीहै केवलतुलसीदासके झूठलिखनेसेलोगकहतेहैं क्योंकि तुलसीदास कीमिथ्या २बातबि-चारनाचाहिये नारीनामस्त्रीकारूपदेख के स्त्रीमोहितनहीहोतो फिरसीताकेस्वयंबरमें लिखाहै किजबस्वयंवर मेसीताजीआईतब-नरऔरनारीसब मोहितहोगये सोताजीकोदेखके यहबात पूर्वा-पर उसकीविरुद्धहै औरअपनेग्रंथमेंउननेलिखाहै किअठारहपद्म यूथपबानरथे सोएक२ काचार२कोसकाशरीरलिखा तथाकुंभक-र्णकोमोंकुचार २ कोसकीलंबोलिखीहै १६ सोलहकोसकीनाक ६४कोसकाहाथलम्बा८६ कोसकाउदरऐसाजोकुंभकर्णहोता तो-लंकामें एकभीनहीसमाता औरअठारहपद्मबानरपृथिवी भरमेंन-हीसमाते तथा बांदरमनुष्यकीभाषानहीबोलसके फिरसुग्रीवादि-करामसेकैसेबोलसकेंगे राज्यकाकरनाऔरबिवाहपशुओंमेंकभी नहीहोसक्ता ऐसी २ बहुत तुलसीकृतरामायणमें झूठबातलि-खीहै सोइसके कहनेकाक्या प्रमाण फिरपाषाणकेऊपररामना-मलिखदियेउसेपाषाणसमुद्रकेऊपरतरेहैं यहबातउसकी मिथ्या-है क्योंकिऐसाहोता तोहमलोगभीपाषाणकेऊपररामनामलि-खके उसकातर नादेखते सोनहीदेखनेमेआता इससेझूठबातको माननानचाहिये जैसीयहबातझूठहैउसकोवैसीरामेश्वरकोलिखी भीझूठहैकिसीदक्षिणकेधनाढ्यनेमंदिरबनायाहै उसकानामहैरा-मेश्वर उसकोचार४००बरसभयेहोंगे औरएकदक्षिणमेंकालिया-कंतकामंदिरहै इसविषयमेंलोगोंनेऐसीबातबनालिईहै किबहमू-

र्तिहुक्का पीती है सो झूठ है क्योंकि पाषाणकी मूर्ति हुक्का कैसे पीयेगी इसमें लोगोंने मूर्तिके मुखमें छिद्र बना रक्खा है उस छिद्रमें नाली लगाके कोई मनुष्य छिपके धूंआ खींचता है फिर वे पुजारी कहते हैं देखो साक्षात् मूर्ति हुक्का पीती है ऐसा बहकाके धन हर लेते हैं ऐसे ही जयपुरके राज्यमें एक जीन देवी बनती है वह मद्य पीती है सो भी बात झूंठ है क्योंकि वह मूर्ति पोली बना रक्खी है उसके मुखमें छिद्र है मद्यके पात्रको मुखसे लगाके ढरका देते हैं वह मद्य अन्यस्थानमें चला जाता है फिर उसीको लेके बेचते हैं तथा द्वारिकाके विषयमें लोग कहते हैं कि द्वारिका सोनेकी बनी है उसमें एक पीपा भक्त समुद्रमें डूबके चला गया था उनको श्रीकृष्णजी मिले उनसे बातचीत भई पीपाने कहा कि मैं तो आपके पास रहूंगा तब श्रीकृष्णने कहा कि मर्त्यलोकका आदमी यहां नहीं रह सक्ता सो तुम हमारा शंख चक्र गदा पद्म के चिन्ह द्वारकामें ले जाओ और सबसे कहदेओ कि इन चिन्होंका दाग तप्त करके जो लगवालेगा सो बैकुंठमें चला आवेगा ऐसे ही चक्रांकित लोग भी कहते हैं सो यह बात मिथ्या है क्योंकि जीते शरीरको जलानेसे कोई बैकुंठमें नहीं जासक्ता है और जो जा सक्ता तो मरे भये शरीरको भस्म कर देते हैं इससे बैकुंठके आगे भी जायगा फिर जीते शरीरको जो जलाना यह बात केवल मिथ्या है एक पंजाबमें ज्वालाजीका मंदिर है उसमें अग्नि निकलता रहता है इसको कहते हैं कि साक्षात् भगवती है इनसे पूंछना चाहिये कि तुमारे घरमें जब रसोई करते हैं तब चूलेमें भी ज्वाला निकलती रहती है प्रश्न चूलेमें तो लकडी लगानेसे निकलती है और वहां आपसे आपही निकलती रहती है उत्तर ऐसे ही अनेक स्थानोंमें अग्नि निकलती है सो पृथिवीमें अथवा पर्वतमें गंधकादिक धातु हैं उनमें किसी प्रकारसे अग्नि उत्पन्न होके लगजाता है सो पृथिवीको फोडके ऊपर निकल आता है जबतक वे गन्धकादिक धातु रहती हैं तबतक अग्नि जलता ही रहता है यही पृथिवीके हिलनेका कारण है क्योंकि जब भीतरसे बाहर पर्वतमें अग्नि निकलता है तभी पृथिवी

मेंकंपहोजाता है सोवहबातकेवलमनुष्योंनेअपनीआजीविकाकेवा-
स्ते मिथ्यावनालिईहै एकउत्तराखण्डमें केदारऔरबद्रीनारायणये
दोस्थानप्रसिद्धहैं इसविषयमेंलोगऐसाकहतेहैंकिबद्रीनारायणकी
मूर्तिपारसपत्थरकीहै औरशङ्कराचार्यनेस्थापितकिईहै सोयहबा
तमिथ्याहै क्योंकिजोवहपारसपत्थरकीरहती तो पुजारीलोगद-
रिद्रक्योंरहते औरयहबातझूठमालूमदेतीहै किपारसपत्थरसेलो
हाछुआनेसेसोनाबनजाताहै इसकोकिसीनेदेखातोहैनही सुनतेसु
नातचलेआतेहैं इसबातकाक्याप्रमाण औरशङ्कराचार्यतोमूर्ति-
योंकेतोडनेवालेथे वेस्थापनक्योंकरते केदारकेविषयमें ऐसीबात-
लोगकहतेहैं किजबपांडवलोग हिमालयमेंगलनेकोगये तबमहा
देवकादर्शनकियाचाहतेथे सोमहादेवने दर्शननहीदिया क्योंकि-
वेगोत्रनामअपनेकुटुंबके पुरूषोंकोमारकेयुद्धमेंआयेथे सोमहादे-
वपार्वती औरसबउनकेगणोने भैंसेकारूपधारणकरलियाथा सो-
नारदजीनेंकहाकिमहादेवादिकोंनेंभैंसाका रूपधारणकरलियाहै
तुमकोबहकानेकेवास्तेइसकोयहपरीक्षाहैकिमहादेवकिसीकीटां-
गकेनीचेसेनहीनिकलतेसोभी मनेतीनकोसकेछोटेछोटेपर्वतथेउनके
ऊपरदोटांगरखदिई एक२केऊपर फिरसबभैंसेतोउनकेनीचेसे-
निकलगये परन्तुएकभैंसानहीनिकला तबभीमनेनिश्चयकरलिया
कियहीभैंसाहैउसकोपकडनेकोभीमदौडा तबवहभैंसापृथिवीमेंगु-
प्तहोगया उसकासिरनैपालमेनिकलाजिसका नामपशुपतिरक्खा
है तथाउसकापगकाश्मीरमेंनिकला उसकानामअमरनाथरक्खा
औरचूतडवहीनिकला जिसकानामकेदारहै औरजंघाजहांनिक
लीउसकानामतुंगनाथादिकरक्खाहैऐसेपंचकेदारलोगोंनेरचलि
येहैं इसमेंविचारनाचाहियेकिनैपालमेंभैंसेकाअंगनांककानकुछ
भीहोदेखपडताहै तथाकाश्मीरमेंखुरभीनहीदेखपडते ऐसेअन्यत्र
कुछभीनहींभैंसेका चिन्हदेखपडताकिन्तु सर्वत्र पाषाणहीदेखप-
डताहैपरन्तु ऐसी २ मिथ्याबातकोमनुष्यलोग मानलेतेहैंयहके-

वलअविद्याऔर मूर्खताकागुणहै क्योंकि भीमइतना लंबाचौडा
होतातो उसकाघरकितनालंबा चौडाहोताऔर नगरमें वामा-
र्गमेंकैसेचलसक्तातथा द्रौपद्यादिकउनको स्त्रीकैसेवनसक्ती औरम
हादेवकोक्याडरपडाथा किभैंसाहोजाय फिरइतना लंबाचौडा
क्योंवनजाता औरक्याअपराध वा पापमहादेवनेकियाथा किचे-
तनसेजडवनजाय इससेयहबातसब मिथ्याहैएककमाख्यास्थानर-
चरक्खाहै उसमेंएककुंडवनारक्खाहै उसकानाम योनिरक्खाहै
औरवहरजस्वला होतीहै यहसबबात उनपुजारियोंने आजीवि-
काकेहेतुमिथ्यावनालिईहै एकबौद्धगयास्थानहै उसमेंबौद्धकीमूर्ति
बनारक्खीहै उसकोपूजा और दर्शनआज तककरतेहैं वहमूर्ति
केवलजैनोंकीहै सोऐसाजाननाचाहियेकिजितनापाषाणपूज-
नहै औरजोजडपदार्थोंकापूजन सोसवजैनोंकाहीहै एकगयास्था
नवनारक्खाहै उसमेंबडासंसारका धनलूटाजाताहैगयाकेपण्डा-
ओंकोमुफ्तकाबहुतधनमिलताहैसोवेश्यागमनमद्यपानऔरमां-
साहारमेंहोजाताहै केवलप्रमादमें अच्छेकाममेंकुछनहीफिरय-
जमानलोगमानतेहैंकिगयाकेश्राद्धसेहीपितरोंकाउद्धार होजाता
है सोऐसेकर्मोंसे उद्धारतोकिसीकाहोतानही परन्तुनरकहोनेका
संभवहोताहै फिरइसविषयमें ऐसाकहतेहैं किरामचन्द्रनेगयामें
श्राद्धकियाथा सोसाक्षात्दशरथजो उनकेपिताउननेहाथनिकाल
केगयामेंपिण्डलेलियाथा उसदिनसेगया कामाहात्म्यचलाहैऔ-
रवहस्थानगयासुरकाथासोयहबातसबमिथ्याहैक्योंकि वेलोगआ-
जकालभीहाथनिकालके क्योंनहीपिण्डलेलेते किसीसमयकोईपु
रुष फल्गूनदीमें भूमिमेंगुहा बनाकेभीतर बैठरहाहोगा और-
उनोंनसंकेतबनारक्खाथा ऐसेहीउसनेभूमिमेंसे हाथनिकालके-
पिण्डलेलियाहोगा फिरझूंठबात प्रसिद्धकरदिई किसाक्षात्[illegible]
लोगहाथनिकालकेपिण्डलेलेतेहैं उसस्थानकापण्डितोंनेमाहा-
त्म्यबनालिया फिरप्रसिद्धहोगई औरसबमाननेलगे सोगयाना-

मन्दिरस्थानमेंश्राद्धकरें औरअपनेपुत्रपौत्र तथाराज्यजिसदेशमें-
अपनेरहताहोयउनका नामगयावेदीकेनिकटमें लिखाहैउस-
काअर्थ अभिप्राय तोजानानहो फिरयहपाखण्डरचलियाकाशि-
राजनेमहाभारतमेंलिखाहै किउसनेनगरवसायाथा इससेउसका
नामकाशीपडा औरवरुणा तथा असीनालाकेवीचमेंहोनेसे वा-
राणसीनामरक्खागया इसकाऐसा झूठ माहात्म्य बनालिया है-
किसाक्षात महादेव कीपुरीहैऔर महादेव नेमुक्तिका सदावर्त्त
बांधरक्खा हैतथाऊसरभूमिहैइसमेंपापपुण्यलगताहोनहीं रुबदेव-
तापंदरहर कलामेकाशी मेंरहतेहैं औरएकर कलासेअपनेर स्थान
मेंरहतेहैं एकमणिकर्णिकाकुंडरच रक्खाहै कियहांपार्वतीकेकान
कामणिगिरपडाथा तथाकालभैरव यहांकाकोटपालहै सोसबको
दण्डदेताहैपापपुण्य कीव्यवस्थासेइसकाशीका महाप्रलयमें भीप्र-
लयनहीहोता क्योंकिकालभैरव त्रिशूलकेउपरकाशीकोरखलेताहै
औरभूचालमेंहलतीभीनहीपंच काशीकेवीचमें जोकोईकीटपतंग
तकभीमरैतोउसको महादेव मुक्तिदेदेतेहैं अन्नपूर्णा सबकोअन्न
देतीहैअन्तर्गृहीऔरपंचक्रोशीके करनेसेसबपापछूटजातेहैंइत्या-
दिकमिथ्यार जालरचकेकाशीरहस्य औरकाशीखण्डादिकग्रंथब-
नालियेहैं औरकहतेहैंकिबारहज्योतिलिंगहोतेहैंउनमेंसेएकयह
विश्वनाथहैउनसेपूंछना चाहियेकिज्योति लिंगहोतेतोमंदिरमें
कभीअन्धकारनहोता औरवहपाषाण मुक्तिवाबन्धकभी नहोकर
सक्ताक्योंकिउसीको कारीगरोंने मंदिरकेवीच गढेमेंचिपकाकेबं-
धकररक्खाहैफिर अपनेहीबंधने सेनहीछूटसक्ता फिरअन्यकोमु-
क्तिक्याकरसकेगा सोयहकेवलपण्डितोंने बातबनालिईहै किका-
शीमेंमरनेसे मुक्तिहोतीहैक्योंकिइसबातको सुनकेसबलोगकाशी
मेंमरनेकेहेतुआवेंगे उनसेहमारी आजीविका सदाहुआकरेगी
इससे ऐसी र जाल रचाकरतेहैंप्रयागमें गंगायमुनाके संगममेंए-
कतीसरीझूंठसरस्वती मानलेतेहैंकि तीसरीसरस्वती भीयहांहै

और दूरस्थान में मुंडानेसे सिद्ध होजाता है सो ऐसा अनुमान किया
जाता है कि पहिले कोई नौवा था उसने अपने कुलको आजीविका कर
लिई है और संगम में स्नान करनेसे मुक्ति होजाती है यह केवल आजी-
विकाके वास्ते झूठ२ बात और झूंठ२ पुस्तक लोगोंने बना लिए हैं कि
प्रयागतीर्थ राज है ऐसेही अयोध्या में हनुमानजीको रामजी गद्दी दे-
गये हैं और अयोध्यामें निवाससेभी मुक्ति होती है यहभी उनकी बात
मिथ्याही है तथा मथुरा और वृन्दावनमें बडी२ मिथ्या बात बना लि-
ई हैं कि यमद्वितीयाके स्नानसे यमके बंधनसे जीव छूट जाता है क्यों-
कि यमुना यमराजकी बहिन है और वृन्दावनके विषयमें मुक्तिभी रो-
ती है कि मेरी मुक्ति कैसे होयगी मुक्ति मुक्ति के वास्ते वृन्दावनको गलि
यों में झाडू देती है और मंदिरों में नाना प्रकारके प्रमादों से व्यभिचा-
रादिक करते हैं तथा अनेक प्रकारके जालों से लोगोंका धन हरण क-
रलेते हैं एक चक्रांकितोंने मंदिर रचवाया है उसके दरवाजोंका ना-
म वैकुंठद्वार इत्यादिक रक्खे हैं और सकल पुंगव सब मनुष्य मिलके
इकट्ठे खाते हैं सकलपुंगव उसका नाम है कि कच्चोपक्को सब प्रकारका
पक्का कच्चा अन्न रनता है फिर ब्राह्मणसे लेके अंत्यजपर्यन्त उनके जितने
शिष्य हैं उनकी पंक्ति लगजाती है उनके हाथके बीचमें थोडा २ सब प-
दार्थ सबको देदेते हैं और वे खालेते हैं उनमें से कोई जलसे हाथ धो-
डालता है और कोई वस्त्र से पोंछलेता है और ठाकुरजीको झुलाब दे-
ते हैं उसमें भी बडे २ अनर्थ सुननेमें आते हैं और एक राधवेश्याके घर
ठाकुरजी जाते हैं फिर उनको प्रायश्चित्त कराते हैं और यमुनाजीमें
डुबाके स्नान कराते हैं यह केवल उनका मिथ्या प्रपंच है पर धन हरने
के वास्ते और मूर्खोंको बहकानेके वास्ते फिर उस मंदिरमें बहुत लो-
गोंको शंखचक्रादिक तपाके दाग देदेते हैं ऐसे २ मिथ्या छलप्रपंच से
अपनी आजीविका करते हैं इनमें कुछ सत्य वा चमत्कार नहीं तथा गं-
गादिक तीर्थोंके विषयमें सब पापका छूटना वैकुंठमें जाना मुक्तिका
होना और ब्रह्मद्रव तथा साक्षात् भगवती का मानना यह बात मि-

थ्याहैक्योंकि हिमवतः प्रभवतिगंगायह व्याकरणमहाभा[illegible]काव-
चनहैइसका यहअभिप्रायहै किहिमालयसे गंगा उत[illegible]ोहै
तथा यमुनादिक नदियां बहुत हिमालयसे उत्पन्नभई[illegible]रवि-
न्ध्याचलमेतथा तडागोंमभोबहुतनदियां उत्पन्नहोतींहैं[illegible]जल
सबमेहै उसजलमें उत्तममध्यमऔर नीचताभूमिके संयोगगुणसे
हैइससेअधिककुछनहो सोजल होताहै वहजडक्यापापको छोडास-
केगाऔरमुक्तिकोभीदेसकेगा कुछभीनहो जैसाजिसजलमेंगुणहै
शीतउष्णमिष्टनिर्मलता वैसाही उसमेहोताहै इनसे अधिकगुण
नहोवेक्षारमिष्टादिक गुणसबभूमिकेसंयोगसे हैंअन्यथानहोगंगे-
त्वद्दर्शनान्मुक्तिर्नजाने स्नानजंफलम् इत्यादिक नारदादिकोंके-
नामोसे मिथ्या २ श्लोकलोगोने बनालिएहैं जोदर्शनसे मुक्तिहो-
तीतोसब संसारकोही मुक्तिहोजाती औरमुक्तिमेकोई अधिकफ-
लनहीहैकिसंसार मेस्नानसेकुछ अधिकहोवैयह केवलमिथ्याक-
ल्पनाउनकीहै किकाश्यांमरणान्मुक्तिःगंगेत्वद्दर्शनान्मुक्तिः सहः-
स्रभगदर्शनान्मुक्तिः हरिस्मरणान्मुक्तिः॥ इत्यादिकमिथ्याश्रुति
लोगोंनेबनालिईहैं किन्तु ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः यहसत्यश्रुतिहैकि
विनाज्ञानसेकिसोकोमुक्तिनहोहोतीक्योंकिसत्यासत्यविवेककेविना
असत्यकेदोषोंकाज्ञाननहीहोता दोषज्ञानकेबिनामिथ्याव्यवहार
औरमिथ्यापदार्थोंसेकभीनहो जोवछूटता इससमुक्तिकेवास्ते सत्या
सत्यकाविवेक परमेश्वरमें प्रीतिधर्मका अनुष्ठानअधर्मकात्यागस-
त्सङ्ग सद्विद्याजितेन्द्रियतादिकगुण इनसे अत्यन्तपुरुषार्थसे मुक्ति-
होसक्तीहै अन्यथानही औरजिसकोइसबातकानिश्चयकरनाहोवै
वहइसबातकोकरै किजितनेतीर्थोंकेपुरोहित औरमंदिरस्थानके
पुरोहित उनकेप्राचीनपुस्तकों केदेखनेसें सत्य२ निश्चयहोताहै-
क्योंकि वहयजमानदेशगांव जातिदिनमास औरसंवत्सर इनका
यथावत्पुस्तक जोबहीखाताउसमेंलिखेरखतेहैं उनकेंदेखनेसेठो
क२दिनमास औरसंवत्सरकानिश्चयहोताहै किइसतीर्थवाइसमं-

दिरकाप्रारंभ इससंबत्सरमेंभयाहै क्योंकिजब जिसकाप्रारंभहोता
हैतबउसकेपण्डे औरपुजारी तथापुरोहित उसीसमयबनजातेंहै
देखनाचाहियेकि विंध्याचलमूर्ति केविषयमें लोगकहते हैंकिएक
दिनमें तैबोतीनरूप धारणकर्तीहै अर्थात्प्रातः कालमेंकन्या म-
ध्यानमेंजवान औरसंध्याकालमेंबुढ्ढोबनजातीहै इनसेपूंछनाचा-
हियेंकि रातमेंउसमूर्तिकी कौनअवस्थाहोतीहै सोकेवलपुजारी-
लोगोंकोधूर्त्तताहै क्योंकि जैसावस्त्रआभूषणधारणकरैंवैसाहो स्व-
रूपदेखपडताहैऔरकहतेहैंकिइसमंदिरमेंमक्खीनहीहोतीपरंतु
असंख्यातमक्खीहोतींहैं सोकेवलझूठ बकाकतेहैंआजीविकाकेवा-
स्ते तथाबैजनाथकेविषयमेंकहतेहैंकिकैलाससेरावणलेआयाहैय-
हसबमिथ्याकल्पना लोगोंकीहै क्योंकिआजतक नये २ मंदिरन-
ये२ मूर्त्तियोंकेनामधरतेहैं औरसंप्रदायीलोगोंनेअपने२ संप्रदाय
केपुष्टिकेवास्ते बनालियेहैं उनकानाम रखदियापुराणऔरऐसा
भीवेकहतेहैं कि अष्टादशपुराणानांकर्त्तासत्यवतीसुतः इसकायह-
अभिप्रायहैकिअठारहपुराणोकेकर्त्ताव्यासजीहैं जोकिसत्यवतीके
पुत्रहैं यहबातमिथ्याहै क्योंकिव्यासजीबडेपंडितथे और सत्यवादी
सबपदार्थविद्या यथावत्जानतेथे उनका कथनयथावत्प्रमाणयुक्त-
हीहोताहै क्योंकिउनकेबनायेशारीरकसूत्रहैं औरमहाभारतमें-
सो२ श्लोकहैं वेभीयथावत्सत्यहीहैं प्रश्नमहाभारतमेंअन्यभीश्लोक-
हैं अथवासबव्यासजीकेबनायेहैं उत्तर कईहजारश्लोकसंप्रदायीलो
गोंनेमहाभारतमें मिलादियेहैं अपने२ संप्रदायकेप्रमाणकेवास्ते
क्योंकिशांतिपर्वमें विष्णुकीबडाईलिखीहैऔरसबकीन्यूनताऔ-
रउसीमें सहस्रनामलिखेहैं इससे विरुद्धउसीपर्वमे शिवसहस्रना-
मजहांलिखेहैं वहांविष्णुकोतुच्छकरदियाहै तथाजहां विष्णुकी
बडाईहै वहांमहादेवको तुच्छकरदियाहैऔरजहांगणेशऔरस्वा-
र्तिकस्वामीकीस्तुतिकिईहै वहांअन्यसबकोतुच्छबनादियेहैं तथा-
भीष्मपर्व औरविराटपर्वमे जहांदेवोकीकथालिखीहै वहांअन्यसब

तुच्छ गिनेहैं एकभीम और धृतराष्ट्रको कथालिखीहै कि धृतराष्ट्रके शरीरमें ६००० हाथीकाबलथा तथाभीमकेशरीरमे दसहजारहाथीकाबलथा औरएकगरुडपक्षीकाबल ऐसावर्णनकियाकि जिसकातोलन नहीहोमक्ता उसगरुडकाबलविष्णुकेआगेतुच्छगिना तथाउसविष्णुकाबल वीरभद्रकेआगे तुच्छकरदियाहै वीरभद्रका रुद्रकेआगे औररुद्रकाविष्णुके विष्णुका वीरभद्रकेआगेऐसेपरस्परमिथ्याकथा व्यासजीकी बनाई महाभारत मेंनहोबनसक्ती औरभीऐसी २ कथालिखीहैं किभीमकोदुर्योधननेविषदानदिया जबवहमूर्च्छितहोगया तबउसकोबांधके गंगा जीमें गिरादियासोवहपाताल कोचलागया वहांसर्पोंनेबहुतकाटा फिरजबउसकाविषउतरगया तबसर्पोंकोमारनेलगा उस्सेसर्पभागगयेवासुकीराजासेजाकेफिरकहा किएकमनुष्यका लड़काआयाहै सोबड़ा पराक्रमीहै तबवासुकी भीमकेपासगया औरपूंछाकि तूंकौनहै कहांसेआयाहै तबभीमनेकहा किमैंपाण्डुकापुत्रहूं औरयुधिष्ठिरकाभाई तबतोवासुकी बड़ेप्रसन्नभये औरभीमसेकहा किजितनातुझसेहूं नकुण्डोंमेंसेजल पीयाजाय उतनापी क्योंकियेनवकुण्डअमृतसेभरेहैंऐसासुनकेउठा औरनवकुण्डोंका सबजलपीगया सोनवहजारहाथीकाबलबढ़गया इसमेंविचारनाचाहियेकि विषकेदेनेसे वह भीम मरक्योंनगया औरजलमें एकघडीभरनहीजीसक्ता औरपातालकामार्ग वहांकहांहोसक्ताहै औरजोहो सक्तातोगंगाकाजल सब पातालमें चलाजाता ऐसी २ मिथ्याकथा व्यासजीकी कभी नहीहोसक्ती औरजितनी सत्यकथाहै वेतबमहाभारतमें व्यास जीकीहीकहीहैं औरजितने पुराणहैं उनमेंव्यासजीकाकिथाएक श्लोकभीनही क्योंकिशिव पुराणादिक सबशैव लोगोंके बनायेहैं उसमेंकेवल शिवकोही ईश्वरवर्णन कियाहै औरनारायणादिक शिवकेदासहैं फिर रुद्राक्षभस्म नर्मदाकालिंग औरमृत्तिका का लिंग बनाकेपूजने बिनाकिसीकी मुक्तिनही होतीयहवेदल शै-

वोंकी मिथ्या कल्पना है और इन बातों से कभी नही मुक्ति होती बिना धर्मानुष्ठान विद्या और ज्ञानसे फिर वह जो शिव जिसको कि ईश्वर वर्णन किया था पार्वती के मरने में सर्वत्र रोता फिरा ऐसी कथा श्रेष्ठ पुरुषोंकी कभी नहो होती किन्तु यह केवल शैव संप्रदायवालोंकी बनाई है तथा शाक्त लोगोंने देवीभागवत तथा मार्कण्डेय पुराणादिक बनाए हैं उनमें ऐसी २ कथा झूठ लिखी है कि श्रीपूर्व में एक भगवती परब्रह्मरूप थी उसने संसार रचने की इच्छा किई तब प्रथम ब्रह्माको उत्पन्न किया और कहा कि तूं मेरे से भोग कर तब ब्रह्माने कहा कि तूं मेरी माता है तुझसे मैं समागम नही कर सक्ता तब कोप से भगवतीने ब्रह्माको भस्म कर दिया और दूसरा पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम विष्णु है उस्से भी वैसा हो कहा फिर विष्णु ने भी समागम नही किया इस्से उसको भी भस्म कर दिया फिर तीसरा पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम शिव है उस्से भी कहा कि तूं मुझसे समागम कर तब महादेवने कहा कि तूं तो मेरी माता है तेरे से मैं समागम नही कर सक्ता परन्तु तूं अपने अंग से एक स्त्री को पैदा कर उस्से मैं समागम करूंगा फिर उसने पैदा किई और दोनोंका विवाह भी किया फिर महादेव ने देखा कि ये दो भस्म क्या पड़ी हैं तब देवीने कहा कि तेरे भाई हैं इन दोनोंने मेरी आज्ञा नहो मानो इस्से इनको मैंने भस्म कर दिया फिर महादेवने कहा कि मेरे भाई हैं इनको जिला देओ तब भगवतीने जिला दिये और फिर कहा कि और दो कन्या उत्पन्न करो कि मेरे भाई का भी विवाह होजाय भगवतीने उत्पन्न किई विवाह होगया एक का नाम उमा दूसरीका नाम लक्ष्मी तीसरी साविची इनके विषय में ब्रह्मा नारायणको नाभिसे उत्पन्न भया कहीं लिखा कि ब्रह्मा से रुद्र और नारायण उत्पन्न भये कहीं लिखा कि उमा दक्षकी कन्या कहीं लिखा हिमालय की कन्या है लक्ष्मी समुद्र कि कन्या है कहीं लिखा कि वरुण की कन्या कहीं लिखा कि साविची सूर्य की कन्या है कहीं लिखा कि ब्रह्मा से जगत उत्पन्न भया कहीं नारायण से कहीं महादेव से-

कहींगणेशसे कहीस्कंदसे ऐसीझूंठ २ कथापुराणोंमेंबनारक्खीहै
प्रश्न इसमेविरोधनही क्योंकियेसबकथाकल्पकल्पान्तरकीहैंउत्त-
र यहबातमिथ्याहै क्योंकि सूर्यचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत्
जैसेसूर्यादिकसृष्टिपुर्वकल्पमेंभईथींवैसेसबकल्पमेंहोतीहैं ऐसा
जोकहोगेतोकिसीकल्पमे पगसेभीखातेहोंगेऔरमुखसेचलतेहों-
गेनचसेबोलतेहोंगे जोभमेनबोलतेहोंगे इत्यादिकसबजानलना
लोगोंनेमार्कण्डेयपुराणान्तर्गतजोदुर्गास्तोत्रहैजिसकानामरक्खा
हैसप्तशती उसमऐसे २ झूंठकथ लिखाहै किरुधिरौघमहानद्यः
सद्यस्तत्रप्रसुस्रुवुः रक्तबीजऔर देवीकेयुद्धमें रुधिरकीबडी २ न-
दियांचलीं इनसेपूछना चाहिएकि रुधिरवायुकें स्पर्शसेजमजा-
ताहै उसकीनदीकभीनहीचलसक्ती रक्तबीजइतनेबढेकिसबजग-
त्पूर्णहोगया उनकेशरीरसे उनसेपूंछनाचाहिएकिइत्तनगरगां-
व पर्वतभगवती भगवतीकासिंह कहांखडेथेयस्याःप्रभावमतुलंभ-
गवाननन्तो ब्रह्माहरश्चनहिवक्तुमलंबलंचसा चंडिकाखिलजगत्प-
रिपालनाय नाशायचाशुभभयस्यमतिंकरोतु इसश्लोकमेंब्रह्मा वि-
ष्णुऔरमहादेव कोतोमूर्खबनाया क्योंकिचंडिकाकाअतुलप्रभाव
और बलकोवेनहीं जानतेहैं अर्थात् मूर्खहीभयेचंडिकोपेइसधा
तुसे चण्डिकाशब्द सिद्धहोताहै जोकोपरूपहै वहअधर्मकास्वरू-
पहीहै विष्णुःशरीरग्रहण महमीशानएवच कारितास्तेयतोऽत-
स्त्वांकः स्तोतुंशक्तिमान्भवेत् ब्रह्माविष्णु औरमहादेवतैंनेहीश-
रीरधारण वालेकियेहैं फिरतेरीस्तुतिकरनेकोसमर्थकौनहोस-
क्ताहै ऐसाकहके त्वंस्वाहा त्वंस्वधा त्वंहि इत्यादिक स्तुतिकरने
भीलगा यहबडीभारी प्रमादकीबातहै किजिसकानिषधकरैउसी
कोअपनेकरनेलगजाय सर्वाबाधाविनर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः
मनुष्योमत्प्रसादेन भविष्यतिनसंशयः पूछनाचाहिये उसभगवती
कीप्रतिज्ञाहैकिमेराइसस्तोत्रका पाठऔरमेरीभक्तिकरेगा अर्था-
त्सबदुःखोंसेछूटजायगा औरधान्यधनपुत्रोंसे युक्तहोताहैसो यह

प्रतिज्ञा निजानकहांगई किइसपाठककरने औरकरानेवाले अनेक दुःखोंमेंपीडित देखनेमेंआतेहैं धनधान्यपुत्रोंकी इच्छाभी अत्यन्त होतीहै औरमिलताकुछनहीं यहांतककिपेटभीनहींभरताऐसी२ मिथ्याकथाओंमें विद्याहीनपुरुषोंको विश्वासहोजाताहै यहबडा एकआश्चर्यहै ऐसेहीविष्णुपुराण ब्रह्मवैवर्तऔर पद्मपुराणादिकों मेंअनेक २ झूंठकथा लिखीहैं तथाभागवतमें बहुतमिथ्या कथा लिखीहैं किशुकाचार्य व्यासजीकेपुत्र परीक्षितके जन्मसेसौ१०० बरसपहिलेमरगयाथा परीक्षितका जन्मपीछे भयाहैसोमोक्षधर्म में महाभारतकेलिखाहै फिरजोमनुष्य कहतेहैंकि शुकाचार्यने सप्ताहसुनाया सोकेवलमिथ्याबातहै क्योंकिउससमयशुकाचार्यका शरीरहीनहीथाऔर ऋषिकाश्रापथा कियमलोककोपरीक्षितजाय फिरभागवतमेंलिखा किपरीक्षितपरमधाम कोगयायहउनकी बातपूर्वापरविरुद्ध औरमिथ्याहै औरचतुःश्लोकीसबभागवतकामूलमानतेहैंसोनारायणनेब्रह्मासे ब्रह्माननारदसेनारदने व्यासजीसे व्यासजीनेशुकसे शुकनेपरीक्षितसे फिर भागवत संसारमेंचलनिकला सो यहबडाजाल रचलियाहैक्योंकि ज्ञानंपरमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम् सरहस्यंतदंगंचगृहाणगदितंमया इत्यादिक चारश्लोक बनालियेहैं क्योंकिपरम और गुह्ययेदोनोंज्ञानकेविशेषणहोनेसे वही विज्ञानहोजाता है फिर यद्विज्ञानसमन्वित यह जोउसकाकहना सोमिथ्याहोजाताहै औरगुह्य विशेषणसेरहस्यमिथ्याहोताहै क्योंकि रहस्यनामएकान्त और गुह्यकाहीहैपरमज्ञानकेकहनेसेतदंग अर्थात मुक्तिकाअंगहै यहउसकाकहना मिथ्याहीहैक्योंकि परमज्ञानजोहोताहै सोमुक्तिकाअंगहीहोताहैजैसायह श्लोकमिथ्याहै वैसासब भागवतभी मिथ्याहै क्योंकिजयविजयको कथाभागवतमें लिखीहै सनकादिकचारवैकुंठ कोगयेथे उससमयनारायण लक्ष्मीजीकेपासथे जयऔर विजय येदोनोंवैकुंठ केद्वारपालोंने उनकोरोकदिया तबउनको क्रोधभयाऔरशापज-

यविजयको दिया कि तुम जाओ भूमि में गिर पड़ो तब तो उनको बड़ा भय भया और उनको प्रार्थना किई कि महाराज मेरे शापका उद्धार के मे होगा तब सनकादिकों ने कहा कि जो तुम प्रीति से नारायणकी भक्ति करोगे तो सातवें जन्म तुमारा उद्धार होगा और जो वैर से भक्ति करोगे तो तीसरे जन्म तुमारा उद्धार होगा इस में बिचारना चाहिये कि सनकादिक मिट्टी थे वे वायुवत् आकाशमार्ग में जहां चाहें वहां जाते थे उनका निरोध कैसे हो सक्ता है तथा जयविजय ने वालकरूप थे चारों को क्यों रोका क्योंकि वे क्या दोनों मूर्ख थे और वे साक्षात ब्रह्मज्ञानी थे उनको क्रोध क्यों होता और कोई किसीको प्रीति से सेवा करै और दूसरा उसको दण्ड से मारै उन में से किस के ऊपर वह प्रसन्न होगा जो कि सेवा कर्त्ता है और जो दण्ड मारता है उस के ऊपर कभी किसी को प्रसन्नता नहीं हो सक्ती फिर वे हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप दोनों भये एक को वराह ने मारा और दूसरे को नृसिंह ने उसका पुत्र था प्रल्हाद उसके विषय में बहुत झूंठ कथा भागवत में लिखी है कि उसको कूए में गिराया था और पर्वत से गिराया था परन्तु वह न मरा फिर जो है का खंभ अग्नि से तपाया और प्रल्हाद से कहा कि तूं इसको पकड नहीं तो तेरा सिर मैं काट डालूंगा फिर प्रल्हाद खंभ के सामने चला और चित्त में डरा भी कुछ कि मैं जल न जाऊं सो नारायण ने चिवटी उसके ऊपर चलाई उनको देख के प्रल्हाद निडर होके खंभ को पकडा तब खंभा फट गया और बीच में से नृसिंह निकले सो उसके पिताको पकड के पेट चोर डाला और नृसिंह को बड़ा क्रोध आया सो ब्रह्मा महादेव लक्ष्मी तथा इन्द्रादिक देवों से नृसिंह के कोपकी शांति ही न होभई फिर प्रल्हाद से सब ने कहा कि तूं ही शान्ति कर सो प्रल्हाद नृसिंह के पास गया और नृसिंह शांत होगया सो प्रल्हादको जीभ से चाटने लगा और कहा कि वर मांग तब प्रल्हाद ने कहा कि मेरे पिता का मोक्ष होय तब नृसिंह बोले कि मेरे बर से २१ पुरुषों का मोक्ष होगया तेरे पितादिकों का इन से पूंछना चाहिये कि नारायण ने शूकर और पशु का शरीर क्यों धारण कि-

या औरकैसेधारणकररक्खा हिरण्याक्षपृथिवीको चटाईकोनाईं धरकेसिरानेसोगया सोकिसकेऊपर सोआ औरपृथिवीको उठाई सोकिसकेऊपर खडारहीके और पृथिवीको कोईउठा भीसकताहै औरकोई नारायणकेभक्तृहो पर्वतसेगिरादेवाकूएमेडालदेवहमरजायगा अथवाहाथगोडटूटजायगा रक्षाकोईनहीकरेगा खंभमेंसेनृसिंहकानिकलना यहबातबडीमिथ्याहै औरनृसिंहजोनारायणकाअवतार औरसर्वज्ञहोतातो पहिली बातकोक्योंभूलजाता जोसनकादिकोंने मानवातोनजन्ममेंसद्गतिकहोथी उननेपहिलेही जन्ममेंसद्गतिक्योंदेदिई औरप्रथमही उनकाजन्मथा उसकी २१पीढोनहीचनसक्ती औरजोकश्यप मरीचिब्रह्मातकबिचारैं तोभीचारपीढ़ीहोसक्तीहैं २१तककभीनहीं फिरउसनेलिखाकि हिरण्याक्षहिरण्यकश्यपही रावणकुंभकर्ण शिशुपाल औरदन्तवक्रहोतेभये फिरसद्गतिकिनकोभई यहबडीमिथ्याकथाहैअजामीलकीकथामेलिखाहै किअपनेपुत्रको मरणसमयमें बोलायाउसकाभी नामनारायणथा सोनारायणने इतनाजानाभीनही किमेरेकोपुकारताहै वाअपनेपुत्रको औरवहबडापापीथापरन्तुएकसमयनारायणकेनामसे उसकोवैकुंठकावासदेदिया सोबडाभारीअन्यायकियापकरै औरदण्डनहोय ऐसीकथासुनके लोगोंकीभ्रष्टबुद्धिहोजातीहै क्योंकिएकबारनारायणके नामसे सबपापछुटजाते हैं फिरकोईपापकरनेसभयकभीनहीकरेगा व्यासजीनेसबवेदवेदांगविद्याओंकोपढ़लिया औरपरमेश्वरपर्यन्तयथावत्पदार्थोंकासाक्षात्कारकियाथा तथाअणिमादिकसिद्धिभीभईथी फिरभी सरस्वतीनदीकेतटमे एकवृक्षकेनीचे शोकातुरहोके जैसेरोताहोवै वैसेबैठेथे उससमयपर्वहांनारदआये औरव्यासजीसेपूंछा किआपऐसीव्यवस्थामेंक्योंबैठेहैं तबव्यासजीबोले किमैंनेंसबविद्यापढी औरसबप्रकारकाज्ञानभी मुझकोभया परन्तुमेरेचित्तकी शांतिनहीभई तबनारदजीबोले कितुमने भगवतकथानहीकिई औरऐसाग्रन्थभीको

ईनहींबनाया जिसमेंभगवतकथाहोवै सोआपभागवतबनावेंकृष्ण
जीकेगुणयुक्त तबआपकाचित्त शान्तहोगा इसमेंविचारनाचाहि-
येकिव्यासजी जोनारायणका अवतारहोते तोउनकोअज्ञानशो-
क औरमोह क्योंहोता और जोउनकोअज्ञानादिकथेतोअज्ञानी-
क बनाया जोभागवतउसकाप्रमाणनहींहोसक्ता फिरइसकथामें
वेदादिकोंकोकेवलनिन्दाआतीहै क्योंकिवेदादिकोंके पढनेसेव्या-
सजीकोज्ञान नहींभया तोहमलोगोंका कैसेहोगा फिरभीनिग-
मकल्पतरोर्गलितंफलं इत्यादिकश्लोकोंसे केवलवेदोंकीनिन्दाकी-
किईहै क्योंकिवेदादिक सत्यशास्त्रोंका यहनिन्दानकरतातोइसम
हामिथ्याजालरूपजोभागवतग्रन्थउसको प्रवृत्तिहीनहींहोतीफि-
रउसनेनृगराजकोकथालिखीकि यावत्यः सिकताभूमौयावन्त्योदि
वितारकाः यावत्योवर्षधाराश्च तावतीरददांस्मगाः॥नृगराजाने इ-
तनीगायदिईकिजितनेभूमिमेंकणिकाहैं इससे पूछनाचाहिये किइ-
तनीगायकहां खडीरहतीथीं क्योंकिएकगायतानवाचारहाथके
जगहमेंखडीरहतीहैं उनभूमिकेकणोंको सबभूमिकेमनुष्यकरो-
डहांलाखहां वर्षतकगिनेंतोभीपारावार नहींहोवै फिरभीउस
मिथ्यावादीको संतोषनहींभया मिथ्याकहनेसे कि जितनेआकाश
मेंतारे औरजितने वृष्टिकेबिंदु उतनेगोदान नृगराजनेकिये फि-
रभीवह दुर्गतिकोप्राप्तभया क्योंकिएकगाय एकब्राह्मणकोपहिले
दिईथी फिरभूलके दूसरेकोदेंदिई फिरदोनोंब्राह्मण लडनेलगे-
किएक कहैयहमेरीगायहै दूसराकहेकिमेरी तबनृगराजनेकहा
किदोनोंतुम समझकेएकतो इसगायकोलेलेओ दूसराएककरो-
डकेसौहजारलाख करोडऔर सबराज्य लेलेओ परन्तुलडोमत
वेदोनोंऐसेमूर्खकिलडनेहीरहे किन्तुशान्तनभयेऔरफिर राजा
कोशापदियाकितूदुर्गतिकोजा इसमबिचारनाचाहिये किएक
तोइसने कर्मकांडकीनिन्दाकिईकीथोडीसीभीभूलपडजायतोदुर्ग
तिकोजाय इससे कर्मकाण्डमेंकुछफलनहीं ऐसाउसकीमिथ्याबुद्धि

थीकिइसप्रकारकी मिथ्याकथाउसनेलिखी औरब्राह्मणोंकीनिन्दा लिखीकिसदाहठीहोतेहैं औरराजाने उनकोदण्डभी नहीदिया ऐसेपुरुषोंको दण्ड देनाचाहिये राजाकोफिरकभी हठदुराग्रहन करैं औरराजाका अपराधक्याभयाथा किउसकोंआपलगा एक गोदानके व्यतिक्रमसेदुर्गतीकोवहगया और असंख्यातगोदानका पुन्यउसका कहांगयायह अन्धकारकीबात उनकीकिइतने उसने गोदानकिये परन्तु सबउसकेनष्टहोगये बहुतगोदानोके पुन्यनेकुछसहायनहीकिया फिरउसनेएककथालिखीकि रथेनवायुवेगेन जगामगोकुलंप्रतिजबकंसनेअक्रूरजीकोश्रीकृष्णकेलेनेकेवास्तेभेजा तबमथुरासे सूर्योदयसमयमें बायुवेगरथके ऊपरबैठ केचलेदो कोस दूरगोकुलथासोचारप्रहरमेंअर्थात् सूर्यास्तसमयमेंगोकुल कोआपहुचे इससेपूंछनाचाहियेकि रथकावायुवेगकहांनष्टहोगया जोकोईकहेकि अक्रूरजीकोप्रेमहुआ सोदेरसेपहुंचेपरन्तु घोड़ेकोऔर सहीसको प्रेमकहांसेआया और उसका बायुबेग उसने क्योंमिथ्यालिखा फिरपूतनाको श्रीकृष्णने मारके गोकुलमथुरा केबीचमें उसकाशरीर डालदिया सोछ : कोसतकउसशरीर कोस्थूलतालिखी फिरकंसको मालूम भीनहीं भयाकि पूतनामारी गई वानहीं जोछ:कोसको स्थूलताहोतीतो दोकोसकेबीचमें कैसे समाताकिन्तु गोकुलमथुरा येदोनोंचूर्णहोजाते औरगोकुलमथुराके पारकोस २ तकशरीरगिरतासो ऐसी २ झूठकथा लिखीहैं परन्तु कथाकरनेऔरकरानेबाले सबभांगपानकरकेमस्तहोगयेहैं किऐसेझूठकोभीनहीं जानसक्ते ब्रह्माजीको नारायणजीनेवर दियाकि। भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यतिकर्हिचित् जबतकसृष्टि है इसकानामहै कल्पऔरजबतक प्रलयबनारहै उसकानामहैविकल्पसोनरायणने ब्रह्माजीसेकहाकितुमको कभीमोहनहोगा फिरवत्सहरणकथामेंलिखा किब्रह्मामोहितहोगये और बछड़े कोहरलियाऔरउनीब्रह्मानेतोकहाथा किआपवासुदेवऔदेवकीकेघर

मेंजन्म लीजियेफिर कैसोगाढी भांगपीलिईकिझटभू लगयेकि यह गोपहैवाविष्णुकाअवतारहै औरभागवतबनानेबालेने ऐसानशा कियाहै किबड़ाअंधकारइसकेहृदयमेंहैकि ऐसाबड़ापूर्वापरविरुद्ध लिखताहै औरजानताभीनहींप्रियव्रतकोकथाउसनेलिखीकिसा- तदिनतक सूर्योदयनहींभया तबप्रियव्रत रथपैंबैठकेसूर्यकीनांईप्र- काशितहोकेघूमनेलगासोउसकेरथकेपहियेकेलीकसेसातदिनतक घूमनेसेसातसमुद्रसप्तद्वीपबनगये इस्सेपूंछनाचाहियेकिरथकेचक्र कोइतनोबड़ी स्थूललीकभईतो उसरथ केचक्रका क्याप्रमाणरथ अश्वऔर प्रियव्रतकेशरीरका क्याप्रमाणहोगा एकरथइसकथासे इतनास्थूलहोगाकि पृथ्वीकेऊपर अवकाश नहींहोसक्ताऔरसूर्य आकाशमेंभ्रमणकर्त्ताहै प्रियव्रतनेपृथ्वीकेऊपर भ्रमणकियाफिर जितनासूर्यकाप्रकाश उतनाउस्सेकभीनहीं होसक्ता औरसूर्य लोककेइतनास्थूलभी कभीनहींहोसक्ता भूगोलकेविषयमें जैसा उननेलिखाहै वैसा उन्मत्तभी नलिखेतथा सुमेरुपर्वतकेविषयमें जैसालिखाहैवैसाबालकभीनहींलिखेगा सोऐसीअसंभवऔरमि- थ्या कथाभागवतका करनेबालालिखताहै श्रीकृष्णविद्वानधर्मात्मा औरजितेन्द्रियथे ऐसामहाभारतकी कथासे यथावत् निश्चयहोता हैसो श्रीकृष्णकी जैसीनिन्दा इसनेकराई ऐसीकिसीकीनहोगी क्योंकि उसनेरासमंडलकीकथालिखी उसमेंऐसी २ बातलिखी जिस्से यथावत् श्रीकृष्णकीनिन्दाहोय जैसेकिवृन्दावनसे महावन छः कोसहै वृन्दावनमें बंसीबजाई उसकाशब्दनिकट २ गांवऔर मथुरामेंकिसीनेनहींसुनाकिन्तुजैसाबांदर उड़केजायवैसाशब्दउ- ड़केमहावनमें कैसेगयाहोगा फिरउसशब्द कोसुनके महावनकी स्त्रियांव्याकुलहोगईं फिरउनकेपतियोंनेनिरोधभीकियातोभीकि- सीनेनमानाफिरउलटाआभूषणऔरवस्त्रधारणकरकेवहांसेचली सोछःकोसवृन्दावनमेंनजानेपक्षीकीनांईउड़गईहोंगीपगकाआ- भूषणनाकमेंनाकका आभूषणपगमें कैसेधारणकरलेगीफिरश्रीकृ-

ष्णनेगोपियोंसेकहाकितुमनेबडाबुराकामकियाइस्से तुमअपने२घ
रकोचलीजाओ औरअपनो २ पतिकोसेवाकरो पतियोंकीआज्ञा
भंगमतकरो फिरगोपियांबोलीं कियेझूठपतिहैं सत्यपतितोआ-
पहीहैं हमउनकेपासक्यों जाय आपकोछोडकेतवतोश्रीकृष्णभीप्र-
सन्नहोगये औरहाथसेहाथ पकडकेझटक्रीडा करनेलगेसो छः
मासकोराचिकरदिई क्योंकिस्त्रियांबहुतथीं औरकामातुरथीफि-
रश्रीकृष्णने भीबिचाराकि इनमेंथोडेकालमें तृप्तिनहोगीइस्सेछः
मासकाक्रीडाकेवास्ते कालबनायाफिर क्रीडाकरते२ अन्तर्ध्यान
होगए फिरगोपियांबहुतब्याकुलहोनेलगींऔररोनेलगीं तबश्री
कृष्णफिरप्रसिद्धहोगये तबफिरगोपीप्रसन्नहोगईं फिरभीसबमि-
लके क्रीडाकरनेलगे फिरएकबारएकगोपीकोश्रीकृष्णकंधेपरले-
केबनमेंभागगए उसस्त्रीकावीर्यस्रावहोगयाइसमेंबिचारनाचाहि-
एकि श्रीकृष्णकभीऐसी बातनकरेंगेइस्से बहुतजगत्काअनुपका-
रहोताहै क्योंकिस्त्रीलोगगोपियोंका दृष्टान्तसुनके व्यभिचारिणी
होजांयगीतथापुरुषभीश्रीकृष्णकादृष्टान्त सुनकेव्यभिचारीहोजां-
यगेऐसीकथासे बहुतजगतका अनुपकारहोताहै फिरवहांपरी-
क्षितनेप्रश्नकियाकियहधर्मकाउल्लंघनश्रीकृष्णने क्योंकियाउसका
शुकनेउत्तरदिया ॥ धर्मव्यतिक्रमोदृष्ट ईश्वराणांचसाहसम्तेजी-
यसांनदोषायवन्हेः सर्वभुजोयथा इसकायहअभिप्रायहै किजोई-
श्वरहोताहै सोधर्मकाउल्लंघनकर्त्ताहीहै किन्तु जैसाचाहेवैसा
करें परस्त्रीगमनकरले वाचोरीभीकरले उनकोदोषनही जैसे
तेजस्वीपुरुष जोचाहेसोकरले जैसेतोअग्निसबकोजलादेतोहै औ-
रदोषनहीलगताहै वैसेकृष्णादिक समर्थथेउनकोभी दोषन-
हीलगताइनमेंबिचारनाचाहिये किश्रीकृष्णधर्मात्माथेऐसाका-
मकभीनहीकरेंगे औरजोश्रीकृष्ण ऐसाकर्त्तेतो कुंभीपाकसेकभीं
ननिकलते इस्से श्रीकृष्णनेकभीऐसा कामनहीकियाथा क्योंकिवे
बडेधर्मात्माथे ईश्वराणांवच सत्यं तथैवाचरितंक्वचित् इसकायह

अभिप्रायहै किईश्वरकावचनकहीं २ जैसेसत्यहोताहै वैसेआचरणभीसत्यकहीं२होताहैंसर्वथाईश्वर असत्यबोलताहैऔर अधर्मकोहीकर्तेहैंकिन्तु कदाचित् सत्यवचनबोलताहै ईश्वरऔर सत्यआचरणइनसेपूंछनाचाहिये कोयहईश्वरकोबातहै वाउन्मत्तकी जोकहतेहैंकि जिसकेकण्ठमेंरुद्राक्ष वातुलसोकीमालानहोय वाललाटमेंतिलकउनकेमुख देखनेसेपापहोताहै उनसेकहोकि उनकीपीठदेखनेसेतोपुण्यहोताहोगा औरवेकहेंकिउनके हाथसे जललेनेमें पापहोताहै तोउनसेकहोकी वहपगसेजलदेदे फिरतोकुछपाप नहीहोगा ऐसी २ बातेंलोगोंनेमिथ्या बनालिईहैं औरभागवत केविषयमेंहमनेथोडेसे दोषदेखाहै परन्तु भागवतसबदोष रूपहोहै वैसेहीअठारहपुराण अठारहउपपुराण औरसबतन्त्रग्रन्थवेनष्टहीहैं इस्सेकुछजगत् काउपकार नहीहोतासिवाय अनुपकारके प्रश्नब्रह्माविष्णु महादेवादिक देवउनकानिवासस्थानकहांहैउत्तरमहाभारतकोरीतिसे औरयुक्तिसेभीयहनिश्चयहोताहैकिब्रह्मादिकसबहिमालयमें रहतेथेक्योंकि इसभूमिमें उनकेचिन्हपायेजातेहैंखाण्डवबन इन्द्रका बागथा पुष्करमेंब्रह्माने यज्ञकियाकुरुक्षेत्रमेंदेवोंने यज्ञकियाअर्जुन और श्रीकृष्णसे इन्द्रादिकोंकायुद्ध होनातथापाण्डवोंसेगान्धर्वोंका युद्धहोनादमयन्तीकेस्वयंवरमेंइन्द्रादिकोंकाआना अर्जुनकामहादेवसे पाशुपतास्त्रकासीखनातथादेवलोकमें जाकेविद्या कापढना भीमका कुबेर पुरीमें जाना तथादशरथऔर कैकैयीका रथकेऊपरचढके देवासुरसंग्राम में जानासर्वमयुद्धदेखनेकेवास्ते विमानोंपरचढकेदेवोंका आनाइस देशवासियोंका अनेकबार समागमका होनामहोदधि औरगंगा काब्रह्मलोकसे आनास्वर्गारोहिणीका कैलाससेनिकलनाअलकनन्दाकाकुबेरपुरीसेआना वसुधाराकावसुपुरीसे गिरनानरऔर नारायणकाबदरिकाश्रममेंतपकाकरना युधिष्ठिरकाशरीर सहितस्वर्गमेंजाना नारदका देवलोकसे इसलोकमें आना यज्ञोंमें

देवोंको निमन्त्रणदेना और उनोंका यज्ञोंमें आना नहुषके इन्द्रका
होना युधिष्ठिर और यमराजका समागमका होना इसवक्ततक ब्र-
ह्मलोक कैलास वैकुंठ इन्द्र वरुण कुबेर वसुअग्न्यादिक आठ वसुपुरि
योंका इनसबके आजतक उत्तरखण्डमें प्रसिद्ध विद्यमानोंका होना
महभारत और केदारखण्डादिकोंमें सबके जो२ चिन्ह लिखे हैं उन
के प्रत्यक्षका होना हिमालयकी कन्या पार्वतीसे महादेवका विवाह हो
ना वरुणकी कन्यासे नारायणका विवाह होना इत्यादिक हेतुओंसे
हिमालयमें होते ये लोक निश्चित था इसमें कुछ मंदेह नहीं सो प्रथम
जबसृष्टिभईथी इसक्या आया कि प्रथमसृष्टि मनुष्योंकी हिमालय
में भईथी फिर धीरे२ बढते चलेवैसे २ सबभूगोलमें मनुष्य वास कर्ते
चले और फैलतेभी चले सो जितनेपुरुष हैं मनुष्यसृष्टिमें वसबहि-
मालय उत्तराखण्ड सेही बढे हैं सो उत्तराखण्डमें ३३ करोड़ मनु-
ष्य प्रथमथे सबपर्वतोंमें मिलके फिर जबबहुतबढे तब चारों ओर म-
नुष्य फैलगए उनमें सविद्याबल बुद्धिपराक्रमादिक गुणोंसे जो युक्तथे
वे ब्रह्मादिक देव कहातेथे और उनकी गद्दीपर जो बैठताथा उनका
नाम ब्रह्मा पडताथा वैसेही महादेव विष्णु इन्द्र कुबेर और वरुणादि-
कनाम पडतेथे जैसे मिथिलापुरीमें जो गद्दीपर बैठताथा उसका ना-
म जनक पडताथा तथा जो कोई राज्याभिषेक होके राजपर बैठे हैं उ-
सका नाम पदवीके योग्य अबतक पडताजाता है जैसे अमात्योंका ना-
म दीवान लाट जज कलकटर इत्यादिक नाम प्रत्यक्ष पडतेहीहैं परन्तु
वे हिमालयवासी देव पदार्थविद्याको हस्तक्रियासहित अच्छीप्रका-
रसे जानतेथे उनमेंसे विश्वकर्मा बडे पदार्थविद्यायुक्तथे अनेकप्रकार
के यन्त्र अग्नि जल वायु इत्यादिकके योगसे विमानादिक रथ चलतेथे
धर्मात्मा तथा जितेन्द्रियादिक श्रेष्ठगुणवाले होतेथे और बडे शूरवी-
रथे नाना प्रकारके आकाश पृथिवी और जलमें फिर नेके वास्ते बना
लेतेथे आकाशमें जो यान रचतेथे उसका नाम विमान रखतेथे सो
उनमनुष्योंमेंसे बहुत दुष्टकर्म करनेवालेथे उनको हिमालयदेवोंने-

कालदिएथे सोहिमालयमें दक्षिणदेशमें आकरकेतथेफिरवडेकुकर्मकरनेको लगगएथे उनकानाम राक्षसपडाथा और कुछउन डाकुओंमेंसेअच्छे थे उनकानामदैत्यपडगयाथा इनदैत्यऔरराक्षसोंसेहिमालयवासी देवोंका वैरबनगयाथा जबउनदेवोंकाबल होताथातबइनको मारतेथेऔरउनकाराज्य छीनलेतेथे जबदैत्यादिकोंकाबलहोताथा तबदेवोंकाराज्यछीनलेतेथे औरमारतेभीथेएकशुक्राचार्यदैत्योंका गुरुथाऔरबृहस्पति देवोंकाथा दोनोंअपने२ चेलोंकोविद्यापढातेथे जबजिसकाबलबुद्धि पराक्रमबढता थाउनकाविजय होताथापरन्तु देवविद्याओंमें सदाश्रेष्ठहोतेथे औरहिमालयमें देवोंकेराज्यस्थानथे इससेदैत्योंकाअधिक बलनहीचलताथा सोअबउसहिमालय देवलोकमें कोईनहीहै किन्तु सबजोपर्वतबासीहैं देवोंकापरीवारवहीहै आर्यावर्त्तादिक देशोंमें जितने उत्तमआचारवालेमनुष्यहैं वेदेवोंकेपरीवारहैंऔरजिननेहवशीआदिक आजतकभी जोमनुष्योंकेमांसको खालेतेहैं वे राक्षसऔरदैत्यके कुलकेहैंसोमहाभारतादिक इतिहासोंसेस्पष्टनिश्चयहोताहै इसमेंकुछसंन्देहनही एकजयपुरमेंनाभाडोमजातिकाथाजिसकागुरुअग्रदासथा सोउसकोंउननेचेलाकरलियाथा उनकानाम नाभादासरक्खाथा सोवैरागियोंकाजूठखाताथाऔरजहांबैरागीलोक मुखहातधोतेथे उसकाजलपीताथा सोवैरागियोंकेजूंठअन्न औरजूंठजलखानेपीनेसे सिद्धहोगया इसप्रमाणसेआजतकवैरागोलोक परस्परजूंठखातेहैं क्योंकिजैसेनाभासिद्ध होगयावैसेहमलोगभी सिद्धहोजांयगे परन्तुआजतककोईजूंठके खानेऔरपोनेसे सिद्धनहीभया इससे यहभीनिश्चितभया किनाभा भीसिद्धनहीथा उननेएकग्रंथबनायाहै उसकानामभक्तमालरक्खा हैउसमेंवैरागियोंकानामसन्तरक्खाहैसोपीपाकोकथाउसनेलिखी है उसकोस्त्रीकानाम सीताथासोउनकेपास बैरागोदसपांचआए उनकेखानेपीनेकेवास्ते पीपाकेपासकुछ नहीथासोउसकी स्त्रोके

पासकहाकि इनसाधुओंके खानेकेवास्ते कुछ लेआना चाहिये क्योंकिउसकोकोई उधारवामांगनेमे नहीदेताथा औरउसकोस्त्री सीताकूपवतीथी सोएकदुकानदारके पासगईऔरकहाकिहमको अन्नऔरघीतुमदेओतबवैश्यनेउसकोदेखके कहाकितूंएकरातभर मेरेपासरहेतो तुभकोमैंदेऊं तबसीतानेकहाकि कुछचिन्तानहीसाधुओंकिसेवाकेवास्ते मेराशरीरहै तबवैश्यनेअन्नादिकदियेऔरउनवैरागियोंको भोजनउनन करायाफिरजब पहररात्रिगईतबपोपासेकहाको ऐसीबातनकहके मैंपदार्थलेआईहूं तबतोपोपानेधन्यवाददिया कितूंबडोसाधुओंकी सेवकहै परन्तुउसवक्तकुछ २ दृष्टिहोतीथीसोसीताको कंधेपरलेजाकेउसबनियेकेपासपहुंचादियातब बनियेनेकहाकि दृष्टिहोतीहैदृष्टिमेंतेरापगभीनही भीजाफिरतूं कैसेआईतबसीताने कहाकितुभको इसबातकाक्या प्रयोजनहै तुभकोजोकरनाहोय सोकरतबवैश्यनेकहाकि तूंसचबोलसीताने कहाकिमेरा पतिकांधेपरचढाकेतेरेदुकानपैंपहुंचादिया तबतोवहवैश्य सीताकेचरणमें गिरपडाऔरकहाकितूं औरतेरापतिधन्यहै क्योंकितुमने संतोंकेवास्ते अपनाशरीरभीबेचडालायहसब बातउनकोअधर्मयुक्त औरभूंठहैक्योंकि यहश्रेष्ठ पुरुषोंकाकामनहीं जोकिवेश्याऔर भडुओंकाकामकरै ऐसेहीधन्नाभगतकाविनाबीजसे खेतजमगयानामदेवको पाषाणकीमूर्त्तिनेदूधपीलिया मीराबाईपाषाण कोमूर्त्तिमेंसमागई औरकोईभगतकेवासमेनारायण कुत्तावनकेरोटी उठाकेभागे औरमीरा विष पीनेसेभीनहीमरी इत्यादिकभगत मालकीबातभूंठहैऔरएकपरिकालउनसाधुओंकोसेवाकरताथा जोकिचक्रांकितथेवहभीचक्रांकितथा परन्तुवहंपरिकाल डांकूपनेसधनहरणकरकेसाधुओंकोदेताथा सोएकदिनचोरी सेवाडांकूपनसे धननहोपायाफिरबडाव्याकुलभया औरघोडे परचढके जहांतहांघूमताथा सोनारायणएकधनाढ्यके वेषसरथपैंबैठके परिकालकोमिले सोभूटप-

रिकालने उनकोघेरलिया और कहाकितुमको मारडालूंगानही
तोतुमसबकुछरखदेओ परन्तुउनकेरखनेमें कुछदेरभईसोझटउ-
तरकेनारायणकेअंगुलोमें सोनेकीअंगुठियांथीं सोअंगूठोसहित
अंगुलीकोकाटलिईतबनारायण बडेप्रसन्नभये और दर्शनदियाकि
तूंबडाभक्तहै देखनाचाहियेकिनारायणभीकैसेअन्यायकारीहैंडां-
कूओंके ऊपर कृपाकर देतेहैं अर्थात् डांकूऔर चोरोंके संगीहैं
फिरवेचक्रांकितलोगनित्य उपदेशसबकर्त्तेहैं किचोरीकरकेभीप-
दार्थलेआवै औरनारायण तथावैष्णवोंकी सेवामेंलगावैतोभीब-
हुत डाभक्तहोताहै औरबैकुंठकोजाताहै फिरवहपरीकालकोईब-
नियेकेजहाजपर बैठकेसमुन्द्रपार बनियोंकेसाथ चलागया वहां
बनियोंनेजहाजमें सुपारीभरीसो एकसुपारीका आधाखण्डपरि-
कालनेजहाजमेंधरदिया औरवैश्योंसे कहदिया किमैंआधीसुपा-
रीपारजाकेलेलेऊंगा तबवैश्योंने कहाकिएकक्या दशतुमलेलेना
तबपरीकालने कहाकिनही मैंतोआधीहीलेऊंगाफिरजहाजपा-
रकोआगया जबसुपारीजहाजसे उतारनेलगे तबपरिकालनेक-
हाकिआधीसुपारी हमकोदेदेओ तबवैश्यलोग सुपारीका आधा
खण्डदेनेलगेसोपरीकाल बडाक्रोधकरके सबसेकहनेलगाकियेवै-
श्यमिथ्यावादीहै क्योंकिदेखोइसपत्रमें आधीसुपारीमेरोलिखीहै
सोयेदेतेनही सोअत्यन्तधूर्त्तता करनेलगाऔर लडनेकोतैयार
भयाफिरजालसाजी करके आधीसुपारी नांवमेंसे बटवालिई उ-
नवैरागियोंकेसेवामें सबधनलगादिया सोऐसोपरीकालकोच-
क्रांकितके संप्रदायमें बडो प्रतिष्ठाहैसोचक्रांकितके मन्त्रार्थग्रंथ
में ऐसीबातलिखीहै सोजितनेसंप्रदाईहैं वेअपनेचेलेका ऐसे २
उपदेशकरकेऔर ऐसेग्रन्थोंको सुनाके पापोंमें लगादेतेहैंफिरभ-
गतमालामें एक कथालिखीहै किएकसाधूएक ब्राह्मण केघरमे
ठहराथाऔर ब्राह्मणउसकी सेवाकरताथा उसकोएककुमारीक-
न्याथीउससे वहसाधू मोहितहोगया सोउसकन्याको लेकेरात्रिमें

कुकर्मकियाऔरखटियाकेउपरदोनोंनंगेसोगएथेसोजबउसकन्या
कापिताप्रात: कालउठातबदोनोंकोनंगे देखकेअपनीचाहरदोनों
परओढादीई औसिपाहियोंसे कहाकियहसाधू भागनजाय फि-
रवहबाहरचलागया तबवेदोनोंउठे उठकेदेखा किवहकिनेडा-
लासोकन्याने पहिचानलिया किमेरेपिताकायहवस्त्रहै फिरवह-
कन्याडरकेभागगई भागकेछिपगई औरसाधूभीवहांसे निकलके
जानेलगा तबसिपाहियोंनेउसको रोकलिया तबतोसाधूबहुतड-
रा तबतककन्याकापिता बाहरसेआया सोसाधू केपासआकेसा
ष्टांगनमस्कारकिया किमेराधन्यभाग्यहै जोकिआपनेमेरीकन्या-
काग्रहणकिया इससेमेराभी उद्धारहोजायगा सोआपआनन्दसेमे
रेघरमेंरहिये औरकन्याकोभी मैंनेआपकोसमर्पण करदिया त
बसाधूबडा प्रसन्नहोकेरहा औरविषय भोगकरनेलगा इसकोवि
चारना चाहिये किबड़े अनर्थकीबातहै क्योंकिऐसीकथा कोसुन
केसाधू औरगृहस्थलोग भ्रष्टहोजातेहैं इसमेंकुछसंदेहनही फि
रभक्तमालमेंएक कथालिखीहै किएकभक्तथा उसकेघरमें साधूपा
हुनेआये फिरउनको सेवाकेवास्ते पितापुत्रदोनों चोरीकरनेके-
वास्तेगये सोएकबनिये कोदुकान कोभींतमें सुरंगदेकेपुत्रभीतर
घुसा औरपिताबाहरखडारहा सोभीतरसे घीचौनीअन्ननिका-
लकेदेताथा औरवहलेताथा जबभीतरसेबाहर निकलनेलगा त
बतक दुकानवालेजागउठे सोउसकेपगतो भीतरथे औरसिरबा-
हरनिकलाथा तबतकउसनेउसके पग पकडलिये औरसिरपकड़
लियापिताने दोनोंतर्फ खींचनेलगे सोउसकेपिताने विचारकि-
याकि हमपकडजांयगेतो साधूओंकी सेवामेंहरकतहोगी सोपुत्र
कासिरकाटके औरघृतादिक पदार्थोंकोलेके भागगयातबतकरा
जपुरुषआये और उनकाशरीर राजघरमेंलेगये औरखोजहोने-
लगा कियहकिसकाहै फिरवहअपनेघरमेंचलागया और साधु-
ओंकेवास्ते भोजनबनाया औरउन कीपंक्तीभई उस समयमेंसाधु

ओंनेपूंछाकि कहांहैतुमारालडका उसकोजल्दी बोलाओ तबउ-
सकेमाता और पिता जोचोर उन्नेकहाकि कहींचलागयाहोगा
आजायगा आपतबतकभोजनकोजिये तबसाधुओंनेकहाकि वहजब
आवेगा तबहमलोग भोजनकरेंगे अन्यथानहीं तब उसकीमा-
तानेरोकेकहा किवहतोमारागया तबसाधुओंनेपूंछा कैसे मारा
गया किहमारेघरमेंआपकेसत्कारकेहेतु पदार्थनहोथा इस्से वेदो
नोंचोरीकरनेकोगयेथे वहांवह मारागया तबसाधुओंनेकहाकि
उसकाशरीरकहांहै तबउन्ने कहाकि सिरहमारेघरमे है औरश-
रीर राजघरमेंहै वेसाधूलोग राजघरमेंजाके शरीरलेआयेशरी
रऔरसिर कासन्धान करकेबीचमेंरखदिया फिरवेसाधूनाचने-
कूदनेऔरगानेलगे फिरवहजीउठा और साधूओंनेआनन्दसेभ
जनकिया औरउनसेकहासाधुओंने कितुमबडेभक्तहो और स्वर्ग
मेंतुह्मारावासहोगा इसमेंविचारनाचाहिये किसाधुओंकीआज्ञा
होनाऔरचोरीकाकरना फिरनरकमेंनजाना किन्तु स्वर्गमेंजा-
ना यहबडोमिथ्याकथाहै ऐसीकथाकोसुनके लोगसब भ्रष्टबुद्धिहो
जातेहैं ऐसी२ कथासबभ्रष्ट भक्तमालमेंलिखीहैं फिरभीलोगों-
कोऐसीमूर्खताहैकिसुनतेहैं औरकतेहैं शिवपुराणमें त्रयोदशीप्र-
दोषव्रत जोकोईनकरै वेनरकमेंजांयगे तन्त्र औरदेवीभागवता-
दिकोंमेंलिखाहै नवरात्र काव्रत नकरैंवेनरकमेंजांयगे तथापद्म
पुराणादिकमेंलिखाहै किदशमी दिग्पालोंका एकादशी विष्णु-
का द्वादशीवामनका चतुर्दशीन्टसिंह औरअनन्तका अमावस्या-
पितृओंका पौर्णमासीचन्द्रका ऐसे मतमतान्तरोंसे औरपुराणत-
था उपपुराणोंसे यहआयाकिकिसीतिथिमेंभोजननकरना औरज
लभीनपीना औरजोकोईखाया वा पीयावहनरककोजायगा इस
मेंवेकहतेहैं किजिसकाबिवाह उसकोगीत इस्से ऐसीकथामेंविरो
धनहीआता उनसेपूछनाचाहियेकि जिसकाबिवाह होताहै उस
केगीतगायेजातेहैं परन्तु पहिलेजिनके बिवाहभयेथे औरजिनके

होनेवालेहैं उनका खण्डनतोनहीहोता किपहीउत्तमहै वापहि
ले जिस्के बिवाह भये और जिनके होंगे उनको नीचतो नही
बनाते इस्से ऐसे२ मूर्खताकेदृष्टान्तसे कुछनहीहोता ऐसे२ स्लोक
लोगोंनेबनालियेहैं कि शीतलेत्वंजगन्माता शीतलेत्वंजगत्पिताशी
तलेत्वंजगद्धात्री शीतलायैनमोनमः एक विस्फोटरोगहै उसका
नामशीतलारक्खा यादृशीशीतलादेवी तादृशोवाहनःखरः शीत
लाअष्टमोकोगधेकीपूजाकर्त्तेहैं औरहनुमान् कारूपमानके बानर
कोपूजाकर्त्तेहैं भैरवकाबाहनकुत्ताकोमानकेपूजाकर्त्तेहैंतथापाषा-
णपिप्पलादिक वृक्षतुलस्यादिक औषधीदूब और कुशादिक घास
पित्तलादिक धातु चन्दनादिककाष्ठ,पृथिवी,जल,अग्नि,वायु,जूता,
औरविष्टातकआर्यावर्त्त देशवालेपूजाकर्त्ते हैं इनकोसुखवाकल्याण
कभीनहीहोसक्ता जबतकइन पाखण्डोंको आर्यावर्त्तबासीलोग न
छोडेगे तबतकइनकाअच्छा कुछनहीहोसक्ता फिरएकशालिग्राम
पाषाण औरतुलसोघास दोनोंका बिवाहकरतेहैं तथा तडागबाग
कूपादिकोंका बिवाहकरतेहैं औरनानाप्रकारकीमूर्तियांबनाकेमं-
दिरमेंरखतेहैं उनकेनाम शिवऔर पार्वती नारायण और लक्ष्मी
दुर्गा काली भैरव,बटुक ऋषिमुनि राधा औरकृष्णसीता औररा-
मजगन्नाथ विश्वनाथ गणेश और ऋद्धिसिद्धि इत्यादिक रखलिये-
हैं फिरइनकेपुजारीबहुतदरिद्र देखनेमेंआतेहैं और सबसंसारसे
धनलेनेके हेतु उपदेश करतेहैं किआओ यजमान धनचढाओ दे-
वताओंको नहीतोतुमको दर्शनका फलनहोगा आमनियालेओ
ठाकुरजीकेहेतु बालभोगलेआओ तथाराजभोगके वास्ते देओऔ-
रगहनाचढाओ तथाबस्त्र औरनारायण तथा माहादेवके वास्ते
मंदिरबनवाओ औरखूबआजीविका लगवाओ हमकहतेहैंकि ऐ-
सेदरिद्रदेवता औरमहंत तथापुजारीलोग आर्यावर्त्तके नाशके
वास्ते कहांसेआगये औरकौनसा इसदेशकाअभाग्य औरपापथा
किऐसे२ पाखण्डइसदेशमेंचलगये फिरइनकोलज्जाभीनहीआ-

तोकिअपनेपुरुषोंका उपहासकर्त्ते हैं कियह सीतारामहैं इत्यादि
कनामलेले केदर्शनकरातेहैं इसमेंबडाउपहासहै परन्तु समझते
नहीं देखनाचाहियेकि कृष्णतोधर्मात्माथे उनकेऊपर झूठजाल
भागवतमेंलिखाहै फिरउसीलीला कोरासमण्डल बनाकेकहते
हैंउसमेंकिसीलडकेको कृष्णबनातेहैं किसीकोराधाऔर गोपियां
बनालेतेहैं तथासीतारामऔर रावणादिक लडकोंकोबनाकेली-
लाकरतेहैं सोकेवलबडे लोगोंकाउपहासइसमेंहोताहै और कुछ
नहींक्योंकि श्रीकृष्णऔररामादिकोंकेजोसत्यभाषणादिकव्यवहा-
र तथाराजनीतिका यथावत्पालना औरजितेन्द्रियादिक सबवि-
द्याओंकापढना इनसत्यव्यवहारोंका आचरणतोकुछ नहीं करते
किन्तुकेवलउपहासकीबातें तथापापोंकोप्रसिद्ध कर्त्ते हैं अपनेकुग-
तिकेवास्ते दशसूनासमंचक्रं दशचक्रसमोध्वजः दशध्वजसमोवे-
षो दशवेषसमोनृपः॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहैकि
सूना नामहत्यासोदशहत्याकेतुल्य जीवोंकोपीडा औरहननचक्र-
सेहोताहै सोतेलीवाकुम्हारकेव्यवहारसेजीवोंकोदशगुणपीडा वा
हननहोताहै इससे दशगुणधोबो वामद्यकेनिकालनेवाले के व्यव
हारमें सौगुणहत्याहोतीहै तथाइससे दशगुणहत्यावेषमेंहोतीहैअ
र्थात् वेषकिसकोकहतेहैंकिकिसीकास्वरूपबनाना औरनकल कर
ना अर्थात् मूर्त्तिपूजन रामलीलाऔररास मण्डलादिकजितने-
व्यवहारहैंवेसबवेषमेंहोगिनेजातेहैंक्योंकिउनकावेषधारणहोकि-
याजाताहै इससेवेषमेंहजारहत्या काअपराधहैतथा जोराजान्या-
यसेपालननहींकरता औरअन्यायकर्त्ताहै वहदसहजार हत्याका
स्वरूपहै इससे वेषबनानावाबनवाना तथादेखनाभी सज्जनोंकोन
चाहिये औरइनसबव्यवहारोंकोछोडनाचाहियेऔर अच्छेव्यव-
हारोंकोकरनाचाहिये ऐसीइसदेशमें नष्टप्रवृत्तिभई हैकिकोईऐ
सा कहताहै मारणमो हनउच्चाटन वशीकरणऔर विद्वेषणादिक
मैंजानताहूं इनसेपूछनाचाहिये कितूंजीवन मरेभयकाभी करा-

सच्चाहै वानहो सोकोईदैवयोगसेमर जाताहै वाकपटछलसे वि-
षादिदेके मारडालतेहैं फिरकहतेहैं किमेरा पुरश्चरण सिद्ध हो
गया यहबातसबझूंठहै कोईरोगीहोताहै उसको बतलाताहै कि
भूतचढगयाहै फिरदूसरा बतलाता है किइसकेऊपर शनैश्चरा-
दिकग्रहचढेहैं तीसराकहताहै किसीदेवताकीखोरहै चौथा कह-
ताहै किकिसीकाश्रापलगाहै येसब बातमिथ्याहैं कोईकहताहै कि
मैंरसायन बनाताहूं औरदूसरा कहताहै किमैंपारे कोभस्मबना
ताहूं उसकोकोईखालेतो बुड्ढेकाजवान होजाताहै यहभीमि-
थ्याहीजानना औरबहुत सेपाखण्डीलोग बहुतपुरुषऔरस्त्रियों
सेकहतेहैं किजाओतुमकोपुत्र होजायगा सोसबतोबन्ध्याहोतीही
नहीहैं जोकिसीकोपुत्रहोजाताहै तबवहपाखण्डीकहता हैकिदे-
खमेरेवरसे पुत्रहोगया औरौंसेभी कहताहै किमेरवरसे पुत्रहो-
गया वहस्त्रीऔर उसका पतिभी बकतेरहतेहैं किबाबाजीके वरसे
मुझको पुत्रभया उनकीबातसुनके बहुतमूर्खलोग मोहित होके
बाबाजीकोपूजामें लगजातेहैं फिरवहपाखण्डी धनपाकेबड़े२ अ-
नर्थकरतेहैं यहसबबातझूंठहै मुहालेऔरमुहई इनदोनोंसेधूर्त्त
लोगकहदेतेहैं कितुह्माराविजयहोगा सोदोनोंकापराजयतोहो-
तानही जिसकाविजयहोताहै उससे खूबधनलेतेहैं किहमारेपुर-
श्चरणऔरवरसे तेराविजयभयाहै अन्यथाकभीनहोता फिरबहुत
बुद्धिहीनपुरुष इसबातसेभी धननाशकरतेहैं कोईकहताहैकि जो
कुछहोताहैसो ईश्वरकीइच्छासेहीहोताहै जैसाचाहता है वैसा
करालेताहै औरकिसीकेकुछकरनेसेहोतानहीसबकोनचावैराम
गोसांई ऐसे २ झूंठबचनबनालियेहैं इनसेपूंछना चाहियेकि जो
वहमिथ्याभाषण चोरीपरस्त्रीगमनादिक कराताहैतो वहबहुतबु
राहैवहकभीईश्वर वाश्रेष्ठनहीहो सक्ता कोईकहताहै कि जोकुछ
होताहैसोप्रारब्धसेही होताहै इनसेंपूंछनाचाहिये किजुमत्र्यवहा
रचेष्टाओंकरतेहो सोपुरुषार्थमेंहो सदाचित्तदेनाचाहियेअन्य-

चनहोवकुतऐसे २ बालकोंकोऔर स्त्रियोंकोबहकातेहैंकिवे जन्म तकनहो सुधरसक्ते ऐसाकहतेहैंकि वहमातापिता तोझूंठहैतुम आजाओनारायणके शरणऔरएक२साधूहजार२कोमूडलेताहै औरवहकाके पतितकरदेतेहैंउनकामरणतक कुछसुकर्मनहीहो- ताक्योंकिसुधरेतो तबजोकुछ विद्यापढे औरबुद्धि होती फिर एक रकोछोंड़देतेहैं औरमातापिताकी सेवाभीछोडदेतेहैंफिरकुटी ठऔर मंदिरोंकोबनाके हजारहांप्रकारके जालमेंफसजातेहैं उनसेपूंछनाचाहियेकि तुमलोगोंनेघर औरमातापितादिकक्यों छोडेयेतबवेकहतेहैं किऐसासुखघरमेंनहीहै ठीकहै किघरमेंछ- परकेनीचेरहनापडताथा मजूरोसेहनतसेचना औरजबकाआ- ाभीपेटभरनही मिलताथा सोआर्यावर्त्तमेंअन्धकारपूर्णहै नित्य ीहनभोगमिलताहै औरनित्यनयेभोग ऐसासुखस्त्रीकाभी गृहा- श्रमनमेंहोहोता इससे गृहाश्रममेंकुछहै नहीदेखियेकिएकरुपैया कोईमंदिरमेंचढाताहै उसकोएकआनेका प्रसाददेतेहैं कभीनही देतेहैंपरन्तुहमलोगोंने इसकोविचारलियाहैकिसोलहपचाससौ औरहजारगुनातकभी इसमंदिरकेदुकानदारोंमें तथातीर्थमें हो ताहै अन्यत्र कैसोहीदुकानदारोंकरो तोभीऐसा लाभनहीहोता क्योंकिखाना नित्यनयीस्त्रियां औरनित्यनानाप्रकार केपदार्थोंकी प्राप्ति अन्यत्रकहीं नहीहोती सिवायमंदिर पुराणादिकोंकोकथा और चेलोंकेमूडनेमें इससेआपहजारकहो हमलोगइस आनन्द- कोछोडनेवालेहैं नहीअच्छा हमनेभीजानलियाहैकिजबतकयज- मानविद्या औरबुद्धियुक्तनहोहोंगे तबतकतुम लोगकभीनहीछो- डोगे परन्तुकभीदैवयोगसेविद्या औरबुद्धिआर्यावर्त्तमेंहोगी फि रतुमको औरतुमारे पाखण्डोंकोवे सेवकऔरयजमान हीछोडें गे तबपीछेभककमारकेतुमलोग भीछोडदेओगे ऐसे२ मिथ्या मत चलगयेहैं किकानकोफाडके मुद्राकोपहिरनेसे योगीऔर मुक्ति होतीहै सोइनकेमतमेंमत्स्येन्द्रनाथ औरगोरखनाथ दोआचार्य

भयेहैं उननेयहमतचलाया उनकोशिवकाअवतारऔर सिद्धमानतेहैं नमःशिवाय उनकामन्त्रहै औरअपनेमतकादिग्विजयभीबनालियाहै औरजलंधर पुराण हठप्रदीपिका गोरक्षशतकादिक बनालियेहैं फिरकहतेहैं येग्रन्थमहादेवनेबनायेहैं उनकाअनाचारवाममार्गियोंकीनांईहै क्योंकिजैसेवाममार्गी लोग श्मशानमें पुरश्चरणकर्त्तेहैं तथामनुष्यकपाल खानेपीनेकेवास्ते रखतेहैं तथारजस्वलास्त्रीका वस्त्रशिखावाबाहुमें बांधरखतेहैंइससे अपनेको धन्यमानतेहैं औरऐसे २ प्रमाण मानलेतेहैं रजस्वलास्तिपुष्करंचाण्डालीतुस्वयं काशीव्यभिचारिणीतुङ्गास्यात्पुंश्चलीतुकुरुक्षेत्रं यमुनाचर्मकारिणी इत्यादिकवचनोंसे वेऐसामानतेहैं किइनस्त्रियोंकेसाथ समागम करनेसे इनतीर्थोंकाफलप्राप्त होताहै फिरवेऐसे २ श्लोककहतेहैं किहालांपिबतिदीक्षितस्यमंदिरेसुप्तोनिशायांगणिकागृहेषुदीक्षितनाम रक्खाहै मद्यबेचनेवालेकाउसकेघरमें जोपुरुषनिर्भयऔर निर्लज्ज होकेमद्यपीताहै फिरवेश्या केघरमेंजाके उससे समागमकरै औरवहींसोजाय उसका नामसिद्ध औरमहावीर रखतेहैं औरलज्जादिक आठपाशोंकोछोडदे तबवहशिवहोताहै इसमेंऐसा प्रमाणकहतेहैं॥ पाशबद्धोभवज्जीवः पाशमुक्तःसदाशिवः अर्थात जितनेव्यभिचारादिकपापकर्म हैंउनकेकरनेमें लज्जादिकजबतककर्त्ताहै तबतकवहजीवहै जबनिर्लज्जादिक दोषोंसेयुक्तहोताहै तबसदाशिवहोजाताहै देखनाचाहियेकि यहकैसीमिथ्याबातउनकीहै फिरउनने मद्यकानामतीर्थरक्खाहै मांसकानामशुद्धि मत्स्यकानामतृतीया रोटीकानामचतुर्थीऔरमैथुनकानामपंचमो जबवेआपसमेंबातकर्त्तेहैं किलेआओतीर्थऔरपीयो इसवास्तेइननेऐसेनाम रखलियेहैं किकोईऔरनजाने औरजितनेवाममार्गीहैं उनकेकौलवीर भैरवआदिऔरगणयेपांच नामरखलियेहैं स्त्रियोंकेनाम भगवती देवीदुर्गाकाली इत्यादिकरखलियेहैं औरजोउनकेमतमेंनहींहैंउनकानामप-

शु कण्टकशुष्क औरविमुखादिक नामरखलियेहैं सोकेवलमिथ्या जालउनकाहै इसकोसज्जनलोग कभीनमानै वैसहोकानफटेना थोंकाव्यवहारहै क्योंकिवभीश्मशान मेंरहतेहैं मनुष्योंका कपाल रखतेहैं वाममार्गियोंसेवमिलतेहैं इत्यादिकबहुत नष्टव्यवहार-आर्यावर्त्त मेचलजानेसें देशकाश्रेष्ठ व्यवहार नष्टहोगया औरसब देशखराबहोगया परन्तुआजकालअंगरेजके राज्यसेकुछ२ सुध-रना औरसुखमयाहै जोअबअच्छे २ ब्रह्मचर्याश्रमादिकव्यवहार-वेदादिक विद्याऔरपाखण्ड पाषाणपूजनादिकोंका त्यागकरैं तो इनकोबहुतसुखहोजाय क्योंकिराज्यका आजकालबहुतसुखहैध-र्मविषयमे जोजैसाचाहै वैसाकरैऔरनानाप्रकारके पुस्तकभीय-न्त्रालयोंकेस्थापनेसेसुगम तासेमिलतीहैंअच्छे २ मार्गशुद्धबनग-येहैं तथाराजाऔरदरिद्रकीभी बातराजघरमेसुनीजातीहै कोई किसीकाजबरदस्तीमेंपदार्थनहीछीनसक्ता अनेकप्रकारकीपाठशा लाविद्यापढनेकेवास्ते राजप्रेरणासेबनतीहैं औरबनीभीहैं उन मेबालकोंकी यथावत्शिक्षाहोतीहै औरपढनेसे आजीविका भी-राजघरमे पढनेवालेकोहोतीहै किसीकावन्धनवादण्डराजघरमे नहीहोता जिसमेंजिसकोखुशीहोय उसकोवहकरै अपनीप्रसन्न तासें अत्यन्तदेशमेमनुष्योकी वृद्धिभईहै औरपृथिवीभी खेतआदि कोंसेबहुतहोगईहै वनादिकनहीरहेहैं लडाईबखेडा गदरकुछइ सवक्तनहीहोतेहैं औरव्यवस्था राजप्रबन्धसे सबप्रकारसे अच्छीब नीहै परन्तुकितनीबात हमकोअपनीबुद्धिसेअच्छीमालूमनही दे-तीहैं उनकोप्रकाशकर्त्ते हैं नजानेवबडेबुद्धिमान्हैं उननेइनबातों मेगुणसमझाहोगा परन्तुमेरीबुद्धिमे गुणइनबातोंमे नहीदेखप डतेहैं इससे इनबातोंकोमैंलिखताहूं एकतोयहबातहै किनोनऔ रपौंनरोटीमे जोकरलियाजाताहै वहमुझको अच्छानहीमालू-मदेता क्योंकिनोनकेबिना दरिद्रकाभीनिर्वाह नहीहोता किन्तु-सबकोनोनका आवश्यकहोता है औरवेमजूरी मेहनतसेजैसेतैसे

निर्वाहकरतेहैं उनकेऊपरभीयहलोन कादण्डतुल्यरहताहै इस्से दरिद्रोंको क्लेशपहुंचताहै इस्सेऐसाहोयकिमद्य अफीम गांजा-भांग इनकेऊपर चौगुना करस्थापनहोय तोअच्छीबातहै क्योंकि नशादिकों काछूटनाहोअच्छाहै औरजोमद्यादिक बिलकुल छूट जांय तोमनुष्योंका बडाभाग्यहै क्योंकिनशासेकिसीकोकुछउपकार नहीहोता परन्तु रोगनिवृत्तिकेवास्ते औषधार्थतो मद्यादिकों कीप्रवृत्तिरहनाचाहिये क्योंकिबहुतसे ऐसेरोगहैंकिजिनकेमद्यादिकही निवृत्तिकारक औषधहैं सोवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे उनरोगोंकोनिवृत्तहोसक्तीहै तोउनकोग्रहणकरैंजबतकरोगनछूटे फिर रोगकेछूटनेसेपीछे मद्यादिकोंकोकभीग्रहणनकरैं क्योंकि जितनेनशाकरनेवालेपदार्थहैं वेसबबुध्यादिकों केनाशकहैं इस्सेइनके ऊपरही करलगानाचाहिये औरलवणादिकों केऊपरनचाहिये पौनरोटीसेभी गरीबलोगोंकोबहुतक्लेशहोताहै क्योंकिगरीबलोगकहींसे घासछेदन करकेलेआये वालकडीकाभार उनकेऊपर कौडियोंके लगनेसे उनकोअवश्यक्लेशहोताहोगा इस्से पौनरोटीकाजो करस्थापनकरना सोभीहमारीसमझसे अच्छानहीं तथा चोरडाकू परस्त्रीगामी औरजूआकेकरनेवालेइनकेऊपरऐसादण्डहोना चाहिये किजिसकोदेख वासुनके सबलोगोंको भयहोजाय और उनकामोंकोछोडदें क्योंकिजितनेअनर्थहोतेहैं वेसबउनसेंहीहोतेहैं सोजैसामनुस्मृति राजधर्ममें दण्डलिखाहैवैसाही करनाचाहिये जबकोई चोरीकरैतबयथावत् निश्चयकरकेकिइसनेअवश्यचोरीकिईहै कुत्तेकेपंजेकोनांई लोहेकाचिन्ह राजाबनाराखे उसकोअग्निमें तपाकेललाटके भौंकेबीचमेंलगादे कुछबेतभीउसकोमारदे औरगधेपैंचढाके नगरकेबीचमें बजारमेंजूतियांभीलगतीं जाय औरघुमायाकरै फिर उसके कुछधनदण्डदे अथवा थोडे दिन जहलखानेरक्खे वहांसूखेचने पावभरतक खाने कोदे औररातभर पिसवावै नपीसेतोवहांभी उसकोजूतेबैठें औरदिव-

समेंभीकठिनकाम उस्से करावे जबतकवह निर्बलनहोजाय परन्तु ऐसाबहुतदिननरक्खे जिस्से किमरनजायफिरउसको दोतीनदिनतक शिक्षाकरै किसुनभाई तैंनेमनुष्यहोके ऐसाबुराकामकिया कितेरेऊपर ऐसादण्डहुआ हमकोभीतेरा दण्डदेखकेबडाहृदयमेंदुःखभया औरआपभलेआदमी होकेव्यवहारकरना फिरऐसाकाम कभीनकरनाचाहिये अच्छे २कामकरनाचाहिये जिस्से राजघरमें औरसभामें तथाप्रजामें तुमलोगोंकी प्रतिष्ठाहोय और आपलोगोंके ऊपरऐसाकठिन जोदण्ड दियागया सोकेवलआपलोगोंकेऊपरनहीं किन्तुसबसंसारकेऊपर यहदण्डभयाहै जिस्से इसदण्डकोदेखके वासुनके सबलोगभयकरैं औरफिर ऐसा काम कोईनकरै ऐसे शिक्षा जितनेबुरे कर्मकरनेवालेहैं उनको दण्डके पीछेअवश्यकरनीचाहिये क्योंकि दण्डकातासदाउसकोस्मरणरहै औरहठो वाविरोधीनबनजाय इसवास्ते शिक्षा अवश्यकरनाचाहिये केवलशिक्षा वाकेवलअत्यन्तदण्डसे दोनोसुधरनहीं सक्ते किन्तुदोनोंसे मनुष्यसुधरसक्ते हैं फिरभोवहचोरीकरै तोउसकाहाथकाटडालनाचाहिये फिरभो वहनमानैतोउसको बुरीहवालसे मारडालना चाहिये किसीदिनउसकी आंखनिकालडालै किसीदिनकान किसीदिननाक औरसबजगह घुमानाचाहिये किजिस कोसबदेखैं फिरबहुतमनुष्योंके सामनेउसकोकुत्तेसेचिथवाडालें ऐसादण्ड एकपुरुषकोहोयतो उसके राजभरमें कोईचोरीकीइच्छाभीनकरेगा और राजाकोभी इनकेप्रबन्धमेंबडाआनन्दहोगा नहींतो बडेप्रबन्धमेंलक्षहोतेहैं साधारणदण्डसे वेकभीसुधरेंगे नहीं डाकुओंकोभी चोरकोनांईदण्ड देनाचाहियेऔर जुआकरनेवालोंको एकवारकरनेसेहो बुरीहवालसे जैसाकोचोरोंकालिखा गधेपरचढानादिकसब करकेफिरकुत्तेसेचिथवाडालनाचाहिये क्योंकि चोरीपरस्त्रीगमन औरजितनेबुरे कर्महैं वेजुआरीसे होहीजातेहैं इस्से उनकेसहाय करनेवालेकोभी ऐसादण्ड देनाचा-

हिये क्योंकि जितने लड ईदंगा चोरीपरस्त्रीगमनादिक इनसे हो उ-
त्पन्न होते हैं इस्से इनके ऊपर राजादण्ड देने में कुछ थोडा भी आल-
स्य न करै सदा तत्पर रहै महाभारत में एक दृष्टान्त लिखा है कि सो-
ने चांदी और अच्छे २ पदार्थ धरे रहैं उसको कोई न स्पर्श करै तब जा-
नना कि राजा है और धनाढ्य लोग लाखहां रूपैयों को दुकान का कि-
वाड कभी न हो लगावै और रात दिन कोई किसी का पदार्थ न उठावै
तब जानना कि राजा है धर्मात्मा इसवास्ते ऐसा उग्रदण्ड चाहिये कि
सब मनुष्य न्याय में चलें अन्याय में कोई न हो जब स्त्री वा पुरुष व्यभिचार
करैं अर्थात परपुरुष से स्त्री गमन करै परस्त्री से पुरुष जब उनका ठी-
क २ निश्चय हो जाय तब स्त्री के ललाट में अर्थात् भौं के बीच में पुरुष के
लिंगेन्द्रिय का चिन्ह लोहे का अग्नि में तपा के लगा दे तथा पुरुष के ल-
लाट में स्त्री के इन्द्रिय का चिन्ह लगा दे फिर जिसको सब देखा करैं फि-
र उनको भी खूब फजीहत करैं और कुछ धनदण्ड भी करैं पीछे उसी प्र-
कार से शिक्षा भी करैं सब को फिर भी वे न मानैं और ऐसा काम करैं त-
ब बहुत स्त्रियों के सामने उस स्त्री को कुत्तों से चिथवा डाल और पुरुष को
बहुत पुरुषों के सामने लोहे के तख्त को अग्नि में तपा के सोवा दे उसके
ऊपर फिर उसके ऊपर घुमावै उसी पर्यंक के ऊपर उसका मरण हो
जाय फिर कोई पुरुष व्यभिचार कभी न करेगा ऐसा दण्ड देख के वा सु-
न के और सर्कार कागद को बेचती है और बहुत सा कागजों पर धन
बढा दिया है इस्से गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुंचता है सो यह बात
राजा को करनी उचित नहीं क्योंकि इसके होने से बहुत गरीब लोग
दुःख पा के बैठे रहते हैं कचहरी में बिना धन से कुछ बात होती नहीं इ-
स्से कागजों के ऊपर जो बहुत धन लगाना है सो मुझ को अच्छा मालू-
म नहीं देता इसको छोडने से ही प्रजा में आनन्द होता है क्योंकि था-
ने से ले के आगे २ धन का ही खर्च देख पडता है न्याय होना तो पीछे फि-
र नाना प्रकार के लोग साक्षी झूंठ रच बना लेते हैं यहां तक कि सत्तू
खाने को दे देओ और झूंठ गवाही हजार बक्त दे वा देओ जो जैसा मनु

में दण्डलिखा है वैसादण्डचलेतो खानेपीनेके वास्तेझूंठोसाक्षोदे-
नेको कोईतैयारनहींहोय अवाङ् नरकमर्थ्यति प्रेत्यस्वर्गोञ्चहोय-
त इसकायहअभिप्राय है कि जबयहनिश्चयहोजायकिइसनेझूंठसा-
क्षोदिई तबउसकोशोभ कचहरीकेबीचमें काटलेवहीअवाक् नाम
शोभरहित जोनरकभोगउस कोप्रत्यक्षहोय क्योंकिराजा प्रत्यक्ष-
न्यायकर्त्ताहै उसीवक्तउसकोप्रत्यक्ष हीफलहोनाचाहियेऔर जि-
तने अमात्यविचारपति राजघरमेंहोवेंउनके ऊपरभीकुछदण्डव्य-
वस्था रखनीचाहिये क्योंकिवेभीअत्यन्तसच झूंठकेविचारमें तत्पर
होके न्यायहीकरनेलगे देखनाचाहियेकि एककेयहांअर्जीपचदि-
याउसकेऊपर विचारपतिने विचारकरकेअपनीबुद्धि औरकानून
कोरीतिसे एककोजीतदिई और दूसरेकापराजय जिसकापराज-
यभयाउसनेउसकेऊपर जोहाकिमहोताहै उसके पासफिरअपी-
लकरी सोप्रायः जिसकाप्रथम विजयभयाथा उसकोदूसरेस्थानमें
पराजयहोताहै औरजिसका पराजयहोताहै उसकाविजय फिर
ऐसेही जबतकधननहीचूकता दोनोंका तबतकविलायततकलडते
हीचलेजाते हैं. प्रायःरहीसलोग इसबातसे हठकेमारे बिगडजाते
हैं इससे क्याचाहियेकि बिचारकरनेवालेके ऊपरभीदण्डकी व्यव-
स्थाहोनीचाहिये जिससे वे अत्यन्त बिचारकरकेन्यायहोकरैं ऐसा
आलस्यनकरैं किजैसाहमारीबुद्धिमें आया वैसाकरदिया तुमको
इच्छाहोयतो तुमजाओ अपीलकरदेओ ऐसीबातोंसेबिचारपति
भीआलस्यमेंआजातेहैं औरबिचारपतिको अत्यन्तपरीक्षा करनी
चाहिये किअधर्मसेडरतेहोय औरविद्याबुद्धिसे युक्तहोयकामक्रो-
ध लोभ मोहभय शोकादिकदोषजिनमेंनहोयऔर अन्तर्यामीजो
सबका परमेश्वर उससे हीजिनकोभयहोय औरसेनहींसोपक्षपात
कभीनकरैं किसीप्रकारसे तबउसराजाकीप्रजाको सुखहोसक्ताहै
अन्यथानहीं और पुलिसका जोदरजाहै उसमें अत्यन्तभद्रपुरुषों
कोरखनाचाहिये क्योंकिप्रथमस्थानन्यायकायहीहै इससे हो आगे

प्रायः वादविवादकेव्यवहार चलतेहैं इसस्थानमेंजोपक्षपातसेअ-
नर्थ लिखा पढ़ाजायगा सोआगेभीअन्यथाप्रायःलिखापढ़ाजायगा
औरअन्यथा व्यवहारभी प्रायः होजायगाइसपुस्तीसमें अत्यन्तश्रे-
ष्ठपुरुषोंको रखनाचाहिये अथवा पहिलेजैसे चौकीदारमहल्ले २
मेंएक२ रहताथा उससेबहुधा अन्यायनहींहोताथा जबसे पुलिस
काप्रबन्धभयाहै तबसेबहुधा अन्यथा व्यवहारभी सुननेमेंआताहै
और गाय बैल भैंसोंकरो और भेंडोआदिक मारेजातेहैं इससे प्र-
जाको बहुतदुःख प्राप्त होताहै औरअनेकपदार्थोंकी हानिभी होती
हैक्योंकिएकगैयादस१०सेरदूधदेतीहैकोई८सेरछः६सेरपांच५से-
रऔरदो २ सेरतक उनकेमध्यछः६ सेरनित्य दूधगिनाजाय कोई
दस१० मासतकदूधदेतीहै कोईछः६ मासतकउसका मध्यस्थआ-
ठमासतक गिनाजाताहै सोएकमासभरमें सवाचारमन दूधहो-
ताहै उसमेंचावलडालके चीनीभीडालदेंतो सौ पुरुषतृप्त होसक्ते
हैं जोऐसेहीपीये तो ८० पुरुषतृप्त होजांयगे और ८०० वा ६४०
पुरुषतृप्तहोसक्ते हैं कोईगाय १५ दफेबियातीहै कोईदसदफे उस
काहमने १२ बक्तारखलिये सो ९६०० सैपुरुषतृप्त होसक्ते हैंफिर
उसके बछड़ेऔरबछियांबढ़ेंगे उनसेबहुतबैल औरगाय बढ़ेंगोए-
कगायसे लाख मनुष्योंका पालन होसक्ताहै उसको मारके मां-
ससे ८० पुरुषतृप्त होसक्ते हैंफिरदूधऔर पशुओंकीउत्पत्तिकामूल
हीनष्टहोजाताहैजोबैलआर्यावर्त्तमेंपांचरुपैयोंसेआताथासोअब
३०सेभीनहींआता औरकुछगांव औरनगरकेपास पशुओंकेचर-
नेकेवास्तेउसकीसीमामेंभूमिरखनीचाहियेजिसमेंकिवेपशुचरैंजै-
सीदुग्धादिकसेमनुष्यके शरीरकीपुष्टिहोतीहै वैसीसूखे अन्नादि-
कोंसेनहीहोती औरबुद्धिभीनहींबढ़ती इससेराजाकोयहबात अव-
श्यकरनीचाहिये किजिनपशुओंसे मनुष्यके व्यवहारसिद्ध होतेहैं
औरउपकारहोताहै वेकभीनमारेजांय ऐसाप्रबन्धकरनाचाहिये
जिस्सेसबमनुष्योंकोसुखहोय वैसाहीप्रजास्थ पुरुषोंकोभीकरनाउ-

चितहै सोराजासेप्रजाजिस्से प्रसन्नरहे औरप्रजासेराजा प्रसन्नरहै यहीबातकरनी सबको उचितहै देखनाचाहियेकि महाभारतमेंसगरराजाकी एककथालिखीहै उसका एकपुत्र असमंजानाम था उसको अत्यन्त शिक्षाकिईगई परन्तु उसने अच्छा आचारवाविद्याग्रहणनहिं किई औरप्रमादमेंहीचित्तदेताथा सोउसकीयुवावस्थाभीहोगई परन्तु उसकोशिक्षा कुछनलगी राजादिकश्रेष्ठपुरुषोंकोउसकेऊपर प्रसन्नतानहीभई फिरउसका विवाहभीकरादियाएकदिनसर्जूमें असमंजास्नानकेलिये गयाथा वहांप्रजाकेबालकआठ २ दश २ बरसके जलमें स्नानकरतेथे औरक्रीडाभीकरतेथे सोउनमेंसेएक बालकबाहरनिकला उसकोपकडके असमंजानेगहिरेजलमें फेंकदिया सोबालकडूबनेलगा तबतककोईप्रजास्थपुरुषने बालकको पकडलिया उसकेशरीरमें जल प्रविष्टहोनेसे वह मूर्छितहोगया उसकीदशादेखके असमंजाबहुत प्रसन्नभया औरहसकेघरकोचलागया कोईबालकउसकेपिताके पासगया और कहाकितुमारे बालककोयहदशाहै राजाकेपुत्रनें करदिई सुनके उसकीमातापिता औरसबकुटुंबकेलोग दुःखीभये उसको देखके फिरउसबालकको उठाकेजहांसगरराजाकीसभालगीथी वहांको चलेराजासभाकेबीचमें सिंहासनपैंबैठेथेसोउनकोआतेदूरसेदेखकेझटउठकेउनकेपासचलेगयेऔरपूंछाकिइसबालकको क्याभया तबउनकीमातारोनेलगी राजानेदेखके बहुतउनकोधैर्यदियाकि तुमरोओमत बातकहदेओकिक्याभयातबबालककापिताबोलाकि हमारेबडेभाग्यहैंकिआपकेजैसेराजाहमलोगकेऊपरहैं दूरसेदेखकेप्रजाकेऊपरकृपाकरकेपूंछना औरदौडकेआनायहबडाप्रजाका भाग्यहैइसप्रकारकाराजाहोना फिरराजानेपूंछाकितुमअपनीबातकहो तबउसनेराजाकोकहाकोएकतोआपहैं औरएकआपकापुत्रहै जोकिअपनेहाथसेहीप्रजाकोमारनेलगा औरजैसाभयाथावैसासत्य २ हालराजासेकहदियातबराजानेंवैद्योंकोबोलाकेउसका

जलनिकलवाडाला और ओषधीं से उसीवक्तस्वस्थ बालकहोगया
फिरसभाकेबीचमेंबालकउसकोमात पिता और जिसनेबालकनि
कालाथावहभीवहांथाफिरराजानेसिपाहियोंकोआज्ञादिई कि अ
समंजाकिसुसकेचढाकेलेआओ सिपाईलोगगयेऔरवैसेहीउसको
बांधकेलेआये असमंजाकोखीभी संग२ चलीआई औरसभामेंखडे
करदियेराजानेपुत्रकीखीसे पूंछाकितूइसकेसाथजानेमेंप्रसन्नहैवा
नहीतबउसनेकहाकिअबजोदुःखवासुखहोसोहोयपरन्तु मेरेअभा-
ग्यसेऐसापतिमिलासोमैंसाथहीरहूंगीपृथक नहीं तबराजानेअस-
मंजासेकहाकितेरा कुछभाग्य अच्छाथा कियहबालकमरानहींजो
यहमरजातातोतुझको बुरेहवालसेचोरकीनाई मैंमारडालतापर-
न्तुतुझको मैंमारणतकदंडनहींसहेताहूं सातूं इभीगांवमें वानगरमें
अथवा मनुष्यों के पासखडारहा वा गयातोतुझ को चोरकीनांई
मारडालेंगे इससेतूंऐसेबनमें जाकेरहकि जहांमनुष्य कादर्शनभीन
होय सिपाहियोंसे हुकुमदेदिया किजाओतुमघोरबनमेंइनदोनों
कोछोडआओ उसकोनवस्त्रदिये अच्छे२ नखानादिई नधनदिये
किन्तुजैसेसभामें दोनोंखडेथे वैसेहीछोडआये फिरवे बनमेंरहे
और उनदोनोंमें बनमेंहीपुत्रभया उसकोखीअच्छीथीसोअपनेपा-
सहीबालककोरक्खा और शिक्षाभीकिई जब पांचवर्षकाभया तब
ऋषियोंकेपास पुत्रकोवहस्त्रीरखआई और ऋषियोंसेकहाकिम-
हाराज यहआपकाहीबालकहै जैसे यहअच्छाबने वैसाकीजियेतब
ऋषिलोग बहुतप्रसन्नहोके उसकोरक्खा किइसकोअच्छोप्रका-
रसेशिक्षाकिईजायगी क्योंकियहसगरकापौत्रहै फिरस्त्रीचलीगई
अपनेस्थानपर औरऋषिलोगोंने उसबालकके यथावत्संस्कारकि
येविद्यापढाई औरसबप्रकारकी शिक्षाभीकिई औरउसनेयथावत्
ग्रहणकिई जबवह ३६ बरसकाहोगया तबउसकोलेके सगरराजा
केपासऋषिलोगगये औरकहाकियह आपकापौत्रहै इसकीपरी-
क्षाकीजियेसोराजानेउसकी परीक्षाकिई औरप्रजा [illegible]

षोंनेभी सोसबगुणऔरविद्यामें योग्यहोठहरा तबप्रजास्थपुरुषों-
नेंराजासेकहा किश्रसमंजा जो आपकापौत्र सोराजाहोनेंकेयो-
ग्यहै तबराजानेकहाकि सब बुद्धिमानप्रजास्थजोश्रेष्ठपुरुष उनको
प्रसन्नता औरसम्मतिहोयतो इसकाराज्याभिषेकहोजायफिरसब
श्रेष्ठलोगोंने सम्मतिदिईऔर उसकाराज्याभिषेकभीहोगयाक्यों-
किसगरराजा अत्यन्तवृद्धहोगयथे राज्यकार्यमें बहुतपरिश्रमपड-
ताथा सोसबअधिकार उसकेऊपरदेदिये परन्तुअपनभी जितना
होसकाथा उतनाकर्त्तेथें राजाऐसाहीहोनाचाहिये किएकभरत
राजाथा जिसकेनामसे इसदेशकाभरतखण्डनामरक्खागयाहैउ-
सकेभीनवपुत्रथे सो २५ वर्षकेऊपरसब होगयेथेपरन्तुमूर्खऔरप्र-
मादीथे राजानेऔर प्रजास्थपुरुषोंने विचारकियाकि इनमेंसे एक
भीराजाहोनेकेयोग्यनहींसो भरतराजाने इस्तिहार करकेपुरुष-
औरस्त्रीलोगोंको बोलाया जोप्रतिष्ठितराजाऔरप्रजास्थथे सोंएक
मैंदानमें समाजस्थानबनाया उसकेबीचमें एकमंचानभीगाडदि-
या सोजबसबलोग एकदिनइकट्ठे भये परन्तु किसीकोंविदितनभ-
याकिराजाक्याकरेगा औरक्याकहेगा फिरमंचानके ऊपरराजा
चढकेसबसे कहाकिजिनराजा अथवाप्रजास्थ रहीसलोगोंका पुत्र
इसप्रकारकादुष्टहोय उसकाऐसाही दण्डदेना उचितहै जोकिइ-
सबक्तहम अपनेपुत्रोंकोदेंगे सोसदा सबसज्जन लोगइस नीतिको
मानें औरकरें फिर मंचानसेउतरे औरनवपुत्रभीनीचमें खडेथे
सब समाजवाले देखभीरहेथे औरउनकीमाताभी सोसबकेसाम-
नेखड्गहाथमेंलेके नवोंकासिरकाटके औरमंचानके ऊपरबांधदि-
ये फिरभीसबसेंकहाकि जोकिसीकापुत्रऐसादुष्टहोय उसकोऐसा
हीदण्डदेनाचाहिये क्योंकि जोहमइनका सिर नकाटते तोयेह-
मोरपीछेआपसमें लडते राज्यकानाशकरतेऔरधर्मकीमर्यादा-
कोतोडडालते इससे राजपुत्र वाप्रजास्थजोश्रेष्ठ धनाढ्यलोग उन
कोऐसाहीकरना उचितहै अन्यथाराज्यधन औरधर्मसबनष्टहो-

जांयगे इसमेंकुछसन्देहनही देखनाचाहिये कि आर्यावर्त्त देशमे ऐसे २ राजाऔर प्रजास्थ श्रेष्ठपुरुषहोतेथे सोइसवक्त आर्यावर्त्त देशमें ऐसेभ्रष्टाचारहोगयेहैं कोजिनको संख्याभीनही होसक्तीऐसासर्वत्र भूगोलमें देशकोईनही ऐसाश्रेष्ठआचारभीकिसीदेशमे नहोथा परन्तु इसवक्त पाषाणादिक मूर्तिपूजनादिक पाखण्डोंसे चक्रांकितादिक संप्रदायोंके वादविवादोंसे भागवतादिक ग्रन्थोंके प्रचारसे ब्रह्मचर्याश्रम औरविद्याके छोडनेसेऐसादेशबिगडाहैकि भूगोलमें किसीदेशकीनहो जसीकिदुर्दशा महाभारतकेयुद्धकेपीछेआर्यावर्त्तदेशकीभईहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यमेकुछ २ सुखआर्यावर्त्त देशमेंभयाहै जोइसवक्तवेदादिक पढनेलगें ब्रह्मचर्याश्रमआश्रम चालीसवर्षतककरें कन्याऔर बालकसवश्रेष्ठशिक्षा औरविद्यावालेहोवें इनमत मतान्तरोंके वादविवाद आग्रहोंको छोडैंसत्यधर्म औरपरमेश्वरको उपासनामें तत्परहोवें तोइसदेशकोउन्नति औरसुखहोसक्ताहै अन्यथानही क्योंकिबिनाश्रेष्ठव्यवहारविद्यादिकगुणोंसे सुखनहीहोता आजकालजोकोई राजा जमोदार वाधनाढ्यहोताहै उनकेपास मतमतान्तरके पुरुष और खुशामदीलोग बहुतरहतेहैंवेबुद्धिधनऔरधर्मनष्टकरदेतेहैंइससेसज्जनलोग इनवातोंको विचारकेसमझलें और करनेकेव्यवहारोंकोकरैं अन्यथानही एकब्रह्मसमाज मतचलाहै वेऐसामानतेहैं नित्यपरमेश्वर सृष्टिकर्त्ताहै अर्थात जीवादिकनये २ नित्यउत्पन्नकर्त्ताहै जीवपदार्थऐसाहै किजड औरचेतनमिलाभया उत्पन्न ईश्वरकर्त्ताहै जबवह शरीर धारणकर्त्ताहै तबजडांशसे शरीरबनताहै और चेतनांशजोहै सोआत्मारहताहै जबशरीरछूटताहैतबकेवलचेतन औरमनआदिक पदार्थरहतेहैं फिरजन्मदूसरा नही होता किन्तुपापोंकाभोग पश्चात्तापसेकरलेताहै ऐसेक्रमसे अनन्तउन्नतिकोप्राप्तहोताहै यहबातउनकीयुक्ति औरविचारसेविरुद्धहै क्योंकि जोनित्य २ नईसृष्टि ईश्वरकर्त्तातो सूर्य चन्द्रपृथिव्या-

सिद्धपदार्थोंकोभी सृष्टिनईर देखनेमेंश्रातोजैसे वृक्षादिककी सृ
ष्टिनई २ देखनेमेंनहीश्राती ऐसेजोमका सृष्टीभीईश्वरने एकवे
रकिईहै सोकेवल कल्पनामात्रसे ऐसाकथनवेदान्तकहतेहैं किन्तु
सिद्धान्तबातयहनहीहै इससे ईश्वरमें नित्यउत्पत्तिका विक्षेपदोष
श्रावेगा और सर्वशक्तिमत्वादिकगुणभीईश्वरमेंनहीरहेंगे क्योंकि
जैसेजीव क्रमसेशिल्पविद्यासे पदार्थोंकोरचनाकर्त्ताहै वैसाईश्वर
भीहोजायगा इससे यहबात सज्जनोंकोमाननेके योग्य नहीं और
एकजन्महीहोताहै सोभी विचारविरुद्धहै क्योंकि अनेकजन्महोतेहैं
सोप्रथमपूर्वार्द्धमेंविचारकियाहैवहीदेखलेना औरपश्चात्तापसेपा
पोंकोनिवृत्तमानना यहभीयुक्तिविरुद्धहै सोप्रथम लिखदियाहैकि
पश्चात्तापजो होताहैसो कियभयेपापोंका निवर्त्तकनहीहोताकिन्
न्तुश्रागेकर्त्तव्य पापोंकानिवर्त्तकहोताहै बिनाशरीरसेपापपुण्यों
काफलभोग कभीनहीहोसक्ता औरबिना शरीरके जीवरहताहीन
नही जोमनमेंपश्चात्तापसे पापोंकाफल जोवभोक्ता तोजिस २ दे
श कालऔर जिनजीवोंकेसाथ पापऔरपुण्यकियेथे उनकाभीमन
मेंस्मरणहोता औरजोस्मरणहोतातो फिरभीजीव सोरकेरो
नेसेवहीं अपनेपुत्र स्त्रियादिकसंबन्धियों के पासश्राजाता सोकोई
श्रातानही इससे यहबातभी उनकीप्रमाणविरुद्धहै और वर्णाश्रम
कोजोसत्यव्यवस्था शास्त्रमेंलिखीहै उसकाछेदनकरताहै सोमनु
ष्योंके अनुपकारकाकर्महै यहदूसरेसमुल्लासमें विस्तारसेलिख
दियाहै वहींदेखलेना यज्ञोपवीत केवलविद्यादिक गुणोंका और
अधिकारकाचिन्हहै उसकातोडनाडालना इससे भी अत्यन्तमनु
ष्योंका उपकारनहीहोता किन्तु विद्यादिक गुणोंमेंवर्णाश्रम का
स्थापनकरना शास्त्रमेंलिखाहै इससे मनुष्योंका उपकारहोसक्ता
है [illegible] नहीं [illegible] ब्राह्मणादिकवर्णमात्र जोशब्द
हैं उनको [illegible] नहीं उच्चारणके निषेधकर्तेहैं सोकेवल उन
को भ्रमहै किन्तु शास्त्रकोरीतिसे मनुष्यादिक जातिमात्रकाशब्दहै

सोमनुष्यपशुइत्यादिककी एकताकोई नहींकरसका सोईमनुष्या-
दिकशब्दजातिवाचकशास्त्रमेंलिखेहैं सोसत्यहीहै औरखानेपीनेसे
धर्मकिसीका बढ़तानहीं औरनकिसीकाघटता इसमेंभीअत्यन्तजो
आग्रहकरनाकिसबके साथखानाअथवाकिसीके साथनहींखानाव
हीधर्ममाननेनायहभी अनुचितबातहै किन्तु नष्टभ्रष्टसंस्कारही
नपदार्थोंकखाने औरपानेमें मनुष्यकाअनुपकार होताहै अन्यच्च
नहींऔरवार्षिकउत्सवादिकोंमेंमेलाकरनाइसमेंभीहमकोअत्यन्त
अच्छागुणमालूमनहींदेता क्योंकिइससेंमनुष्यकी बुद्धिबहिर्मुखहो
जातीहै औरधनभीअत्यन्तव्ययहोताहै केवलअंगरेजीपढ़नेमेंसं-
तोषकरलेनायहभी अच्छीबातउनकीनहींहै किन्तु सबप्रकारकीपु
स्तकपढ़नाचाहिये परन्तुजबतकवेदादिक सनातन सत्यसंस्कृतपु-
स्तकोंकोंनपढ़ेंगे तबतकपरमेश्वरधर्म अधर्मकर्त्तव्य औरअकर्त्त-
व्यविषयोंको यथावत् नहींजानेंगेइससे सबपुरुषार्थमेंइन वेदादि-
कोंकोपढ़नाऔरपढ़ानाचाहिये इससेसबविघ्ननष्टहोजायगेअन्यथा
नहींऔर हमकोऐसा मालूमदेताहैकि थोड़ेहीदिनोंमें ब्राह्मस-
माजकेतीनभेदचलगयेहैं औरउनकाचित्तभी परस्परप्रसन्नन-
हीहै किन्तु ईर्ष्याहीएकसे दूसरेकीहोतीहै सोजैसेवैराग्यादिकों-
मेंअनेकभेदोंकेहोनेसे अनेकप्रमादऔरविरुद्धव्यवहारहोगयेहैंऐ-
साउनकाभी कुछकालमेंहोजायगा क्योंकिविरोधसेहीविरुद्धव्यव-
हारमनुष्योंकेहोतेहैं अन्यथानहींसोवेदादिक सत्यशास्त्रोंको ऋ-
षिमुनियोंकेव्याख्यान सनातनरीतिसे अर्थसहितपढ़ेंतोअत्यन्तउ-
पकारहोजाय अन्यथानहींतो आगे २ व्यवहारहोजायगा ईसा
मूसामहम्मदनानक चैतन्यप्रभृतियोंकोही साधुमानना औरजै-
गीषव्यपंचशिखा आसुरिऋषिऔर मुनियोंकोनहीं गिननायह
भीउनकोभूलहै अन्यच्चजोपरमेश्वरकी उपासनादिकवसबउन-
कीअच्छीहै इसके आगे जैनमतके विषय मेंलिखाजायगा ॥

इतिश्रीमद्दयानन्दसरस्वतिस्वामिकृते स

त्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते एकादशःसमुल्लासःसंपूर्णः ॥ ११ ॥

अथजैनमतविषयाव्याख्यास्यामः॥ सब संप्रदायोंसे जैनकामत-प्रथमचलाहै उसकोसाढेतीनहजार वर्षअनुमानसेभयेहैं सोउनके २४ तिर्थङ्कर अर्थात् आचार्य भयेहैं जैनेन्द्र पारशनाथ ऋषभदेव गौतमऔर बौधादिक उनके नामहैं उन्होंने अहिंसाधर्मपरममानाहै इसविषयमें वेऐसा कहतेहैं किएकबिन्दुजलमें अथवाएकअन्नकेकणमें असंख्यातजीवहैं उनजीवोंकी पांखआजायतो एक बिन्दुऔर एककणकेजीव ब्रह्माण्डमें नसमावें इतनेहैं इससेमुखके ऊपर कपडाबांधरखतेहैं जलकोवस्त्रतछानतेहैं औरसबपदार्थोंको शुद्धरखतेहैं और ईश्वरकोनहीमानते ऐसाकहतेहैं किजगत् स्वभावसेसनातनहै इसकाकर्त्ताकोईनही जब जीवकर्मबन्धनसेछूटजाताहै औरसिद्धहोताहै तब उसकानाम केवलीरखतेहैं और उसीको ईश्वरमानतेहैं अनादिईश्वर कोईनहीहै किन्तुतपोबलसे जीवईश्वररूपहोजाताहै जगत्काकर्त्ताकोईनही जगत्अनादिहै जैसेघासवृक्ष पाषाणादिक पर्वत वनादिकोंमें आपसे आपहीहोजातेहैं ऐसेपृथिव्यादिक भूतभीआपसे आपबनजातेहैं परमाणुका नाम पुद्गलरक्खाहै सोपृथिव्यादिकोंके पुद्गल मानतेहैं जबप्रलय होताहै तब पुद्गलजुदे २ होजातेहैं औरजबवे मिलतेहैं तबपृथिव्यादिक स्थूलभूतबन जातेहैं औरजीवकर्मयोगसे अपना २ शरीरधारणकरलेतेहैं जैसाजोकर्म करताहै उसकोवैसाफलमिलताहै आकाशमें चौदहराज्यमानतेहैं उनकेऊपर णापद्मशिला उसकोमोक्ष स्थानमानतेहैं जबशुभकर्मजीवकर्ताहै तब उनकर्मोंके वेगसे चौदह राज्योंकोउल्लंघन करके पद्मशिलाके ऊपर विराजमानहोतेहैं चराचरकोअपनी ज्ञानदृष्टिसेदेखतेहैं फिर संसार दुःखजन्ममरणमेंनहीआते वहीआनन्दकरतेहैं ऐसीमुक्तिजैनलो-——तेहैं और ऐसाभीकहतेहैं किधर्मजोहैसोजैनकाहीहैऔर

सबहिंसकहैं तथाअधर्मी क्योंकिजे हिंसाकरतेहैं वेधर्मात्मानहीं जेयज्ञमेंपशुमारतेहैं औरऐसी २ बातेंकहतेहैं कियज्ञमें जोपशु माराजाताहै सोस्वर्गको जाताहोय तो अपनापुत्रवा पिता को नमारडालेंस्वर्गको जानेकेवास्ते ऐसे २ श्लोकउननेबनारक्खे हैं चयोवेदस्य कर्त्तारो धूर्त्तभण्ड निशाचरा: इसकायह अभिप्रायहै किईश्वर विषयकिजितनी बातवेदमेंहैं वहधूर्त्तकीबनाईहै जित-नीफलस्तुति अर्थात् इसयज्ञकोकरैंतो स्वर्गमेंजाय यह बातभा-ण्डोंनबनारक्खीहै औरजितना मांसभक्षण पशुमारनेकाविधि-हैवेदमें सोराक्षसोंबनानयाहै क्योंकि मांसभोजनराक्षसोंकाबडा प्रियहै सबबातअपने खानेपीनेऔरजीविका केवास्तेलोगोंनेबना-ईहै औरजैनमतहै सोसनातनहै औरयहीधर्महै इसकेविनाकि सीकोमुक्ति वासुखकभीनहींहोसक्ता ऐसी २ वेबातेंकहतेहैं इन-सेपूछनाचाहिये किहिंसातुमलोग किसको कहतेहो जोवेकहैंकि किसीजीवकोपीडादेना सोतोबिनापीडाके किसीप्राणिका कुछव्य-वहारसिद्धनहीहोता क्योंकिआपलोगोंकेमतमेंहीलिखाहै किए-कबिन्दुमेंअसंख्यात जीवहैं उसकोखाखकरकेजोभीवेजीवपृथ-कनहीहोसके फिरजलपान अवश्यकियाजाताहै तथा भोजनादि-कव्यवहार औरनेत्रादिकोंकी चेष्टाअवश्यकिईजातीहै फिरतुमा-राअहिंसाधर्मतोनहीबना प्रश्न जितनेजीवबचायेजातेहैं उतनेब-चातेहैं जिसकोहमलोग देखतेहोनहीं उनकोपीडामें हमलोगों कोअपराधनहीं उत्तर ऐसाव्यवहार सबमनुष्योंकाहैजेमांसाहा-रीहैंवेभीअश्वादिक पशुओंकोबचालेतेहैं वैसेतुमलोगभी जिनजी-वोंसेकुछव्यवहारका प्रयोजननहीहै जहांअपनाप्रयोजनहैवहांम-नुष्यादिकोंको नहीबचातेहो फिरतुमारो अहिंसानहीरही प्रश्न मनुष्यादिकोंकोज्ञानहै ज्ञानसेवेअपराधकर्त्तेहैं इससेउनकोपीडा देनेमेंकुछअपराधनहीं वपश्वादिकजीव बिनाअपराधहैंउनकोपी-डादेनाउचितनहीं उत्तर यहबात तुमलोगोंकोविरुद्धहैक्योंकिज्ञा-

नवालोंकोपीडादेना औरज्ञानहीनपशुओंको पीडानदेना यहबा-
तविचारशून्यपुरुषोंकोहै क्योंकि जितने प्राणीदेहधारीहैं उनमेंसे
मनुष्य अत्यन्तश्रेष्ठहै सोमनुष्योंका उपकारकरना औरपीडाका
नकरना सबकोआवश्यकहै हिंसानामवैरकासो योगशास्त्र व्या
सजीके भाष्यमेंलिखाहै सर्वथासर्वदा सर्वभूतेष्वनभिद्रोहः अहिं-
सा यहअहिंसाधर्म कालक्षणहै इसकायह अभिप्रायहैकि सबप्र-
कारसे सबकालमें सबभूतोंमेंअनभिद्रोह अर्थात् वैरका त्याग-
सोकहाताहै अहिंसासो आपलोगअपने संप्रदायमेंतोप्रीतकरते
हो औरअन्यसंप्रदायोंमेंद्वेष तथा वेदादिकसत्यशास्त्र तथाईश्वर
पर्यन्त आपलोगोंको वैरऔरद्वेषहै फिरअहिंसाधर्म आपलोगों
काकहनेमात्रहै अपनेसंप्रदायोंके पुस्तकतथाबातभी अन्यपुरुषोंके
पासप्रकाशितनहीकरतेहो यहभीआपलोगोंमें हिंसासिद्धहैईश्वर
कोआप्तलोगनहीमानतेहैं यह आपलोगोंको बडीभूलहैऔर स्व
भावसे जगत्कीउत्पत्तिकामानना यहभीतुमलोगोंकोझूठबातहै इ-
सकाउत्तर ईश्वरऔरजगत्की उत्पत्तिके विषयमेंदेखलेना प्रथम
जीवकाहोना औरसाधनोंकाकरना पश्चात् वहसिद्धहोगाजबजै-
वादिक जगत्विनाकर्त्तासे उत्पन्नहोनहीहोता औरप्रत्यक्षजगत्में
नियमोंकेजगत्में देखनेसे सनातन जगत्कानियन्ता ईश्वर अवश्य
है फिरउसकोईश्वर नहीमानना औरसाधनोंसे सिद्धजोभयाउ-
सीकोहीईश्वरमानना यहबात आपलोगोंकोसबझूठहै आपसेआ
पजीवशरीरधारणकरलेतेहैं तोशरीर धारणमेंजीव स्वतन्त्रठह-
रे फिरछोडक्योंदेतेहैं क्योंकिस्वाधीनतासे शरीरधारणकरलेते
हैंफिरकभी उसशरीरकोजीव छोडगाहीनहीं जोआपकहेंकिक-
र्मोंकेप्रभावसे शरीरकाहोना और छोडनाभीहोताहै तोपापोंके
फलजीवकभीनहीग्रहणकर्त्ता क्योंकि दुःखकी इच्छाकिसीकोनही
होतीसदा सुखकीइच्छाहीरहतीहै जबसनातन न्यायकारीईश्वर
कर्मफलकी व्यवस्थाकाकरनेवालानहोगा तोयहबातकभीनबनेगी

आकाशमें चौदहराज्य तथा पद्मशिला मुक्तिकास्थानमानना यह
बातप्रमाण और युक्तिसेविरुद्धहै केवल कपोलकल्पनामात्रहै और
उसके ऊपरबैठकेचराचर कादेखना और कल्पवृक्ष सवकाचलाना
नायहभीबात आपलोगोंकीअसत्यहै यज्ञोंकेविषयोंमें आपकुतर्क
कर्त्तेहैं सोपदार्थविद्याकेनहींहोनेसे क्योंकिघृतदूध औरमांसादि
कोंकेयथावत् गुणजानते और यज्ञकाउपकारकि पशुओंकोमार
नेमेंथोडासादुःखहोताहै परन्तुयज्ञमें चराचरकाअत्यन्त उपका
रहोताहै इनकोजोजानते तोकभीयज्ञविषयमें तर्ककर्त्ते वेदोंका
यथावतअर्थकेनहीं जाननेसेऐसीबात तुमलोगकहतेहो किधूर्त्त
भांडऔर निशाचरोंनेलिखाहै यहबातकेवल अपनेअज्ञानऔ
रसंप्रदायोंके दुराग्रहसेकहतेहो और वेदजोहै सोसबकेवास्तेहित
कारीहै किसीसंप्रदायकाग्रन्थ वेदनहीहै किन्तु केवलपदार्थविद्या
और सबमनुष्योंके हितकेवास्ते वेदपुस्तकहै पक्षपातउसमेंकुछ
नी इनबातोंकोजानतेतो वेदोंकात्याग और खण्डनकभीनकरते
सोवेदविषयमें सबलिखदियाहै वहींदेखलेना और यज्ञमेंपशुको
मारनेसे स्वर्गमेंजाताहै यहबातकिसीमूर्खके मुखसेसुनलिईहोगी
ऐसीबात वेदमेंकहींनहीं लिखी जीवोंकेविषयमें वेऐसाकहतेहैंकि
जीवजितने शरीरधारीहैं उनकेपांचभेदहैं एकइन्द्रिय द्वीन्द्रियत्री
न्द्रिय चतुरिन्द्रिय औरपंचेन्द्रिय इसमेंएक इन्द्रियमानतेहैं अर्थात्
वृक्षादिकोंमें सोयहबात जैनोंकीविचारशून्यहै क्योंकिइन्द्रिय सू
क्ष्महै नेत्रसे कभीनहींदेखपडती परन्तु द्रव्यका कामदेखनेसेअ
नुमानहोताहै किइन्द्रियअवश्यहै सो जितनेवृक्षादिकोंकीजडहैंउ
नकापृथिवीमें जबजातेहैं तब अङ्कुरऊपरआताहै औरमूल
जाताहै जोनेत्रेन्द्रिय उनकोनहोतातो ऊपरनीचेको कै
इसकाममें निश्चयतज्ञानाजाताहै किनेत्रेन्द्रियजडइत्यादि
है तथाबहुतलताहोतीहै सोवृक्षऔर भित्तीके ऊपर च
जोनेत्रेन्द्रियनहोता तोउसकोकैसेदेखता तथास्पर्शेन्द्रिय

र कारणहोता तो पुण्यकर्मकर्त्ता तोभोईश्वर फलदेता सो बि-
नाकर्म करनेमें जीवकोफलनह देता इसे क्याजानाजाताहै कि
जोजीव कर्मजैसाकर्त्ताहै वैसाफल आपहोप्राप्तहोताहै इसे ऐ-
साकहनाव्यर्थहै फिरभीवह अपनेपक्षको स्थापनकरनेकेवास्ते क
हताहै कि तत कारितत्वादहेतु: ६ गो० ईश्वरही कर्मका फल
औरकर्मकरानेमें कारणहै जैसा कर्मकराताहै वैसा जीवकर्त्ताहै
अन्यथानहीं उत्तर जोईश्वकराता तोपापकोंकराता और ईश्व-
रके सत्यसंकल्पके होनेसे जोजिव जैसाचाहता वैसाहोहोजाता
और ईश्वर पापकर्मकराके फिर जीवकोदण्डदेता तोईश्वरकोभी
जीवसेअधिक अपराधहोता उसअपराधका फलजो दुःखसो ईश्व
रकोभोहोनाचाहिये और कवल छलो कपटी औरपापोंके करा-
नेसे पपोहोजाता इसे ऐसा कभी कहनाचाहिये किईश्वर करा
ताहै चौथ नास्तिकका ऐसामतहै कि अनिमित्ततो भावोत्प
त्ति: कण्टकतैक्ष्ण्यादिदर्शनात् १० गो० निमित्तके बिनापदार्थों
की उत्पत्तिहोतीहै क्योंकि वृक्षमें कांटहोतेहैंवेभीनिमित्तकेबिना
हो तीक्ष्णहोतेहैं कणचोंकी तीक्ष्णता पर्वतधातुओंको चित्रता
पाषाणोंकोचिक्कनता जैसे निमित्त देखनेमेआतीहै वैसेहीशरीरा
दिकसंसारको उत्पत्तिकर्त्ता केबिनाहोतीहै इसका कर्त्ताकोईनहीं
उत्तर अनिमित्त अनिमित्तत्वान्ना निमित्तत: ११ गो० बिननि-
मित्तके सृष्टिहोतीहै ऐसामतकहो क्योंकि जिस्से जो उत्पन्नहोता
है वहीउसका निमित्तहै वृक्ष पर्वत पृथिव्यादिक उनके निमित्त
जाननाचाहिये वैसेही पृथिव्यादिककी उत्पत्तिकानिमित्तपरमेश्व
रहीहै इसे तुमारा कहनामिथ्याहै पांचवे नास्तिकका ऐसाम
तहै कि सर्वमनित्य मुत्पत्ति विनाशधर्मकत्वात् १२ गो० सबजगत्
अनित्यहै क्योंकि सबकीउत्पत्ति और विनाशदेखनेमें आताहैजो
उत्पत्ति धर्मवालाहै सो अनुत्पन्न नहीहोता जो अविनाशधर्मवा
लाहै सो विनाशी कभीनहीहोता आकाशादिक...

को उत्पत्ति किहुकरो वालुकादिकोंके पृथिव्यादिक।
और कारणहै वैसेपृथिव्यादिक स्थूलभूतोंका कार
ननाहोगा ऐसेअनवस्थादोषभीआजायगाऔरसाथ
सकनांई यहकथनहोगा औरइससे देहोत्पत्तिमें नि
वश्यतुमको माननाचाहिये नोत्पत्तिनिमित्तत्वान्म
गो० यह नास्तिकका अपने पक्षकासमाधानहै किउ
त्तिकानिमित्त माताऔर पिताहैं जिनमेंकि शरीर
है और वालुकादिक निर्बीज उत्पन्नहोतेहैं इससेसा
मादेपक्षमें नहीआता क्योंकि मातापिता खानापे
से वीर्य बीजशरीरका होजायगा उत्तर प्राप्तौचानि
ऐसातुम मतकहो क्योंकि इसकानियमनहो माता
संयोगहोताहै और वीर्यभी होताहै तोभीसर्वत्र पुत्रो
खनेमेंआती इससे यहजोआपका कहानियमसो भङ्ग
दिकनास्तिक केखण्डनमें न्यायदर्शनमेंलिखाहै जोदे
देखले दूसरेनास्तिकका ऐसामतहै किअभावा द्भावो
त्पत्त्यप्रादुर्भावात् ५ गो० अभाव अर्थात्असत्यसेजगत्
होतीहै क्योंकि जैसेबीजका नाशकरके अङ्कुर उत्पन्नहै
जगत् कीउत्पत्तिहोतीहै उत्तर व्याघातादप्रयोगः ६ ऐ
साकहना अयुक्तहै क्योंकि व्याघातकेहोनेसे जिसक
ताहै बोजकेऊपरभागका यहप्रकटनहीहोता औरजो
टहोताहै उसकामर्दननहीहोता इससे यहकहना आप
है तीसरानास्तिक कामत ऐसाहै ईश्वरःकारणं पुरुषः
दर्शनात ७ गो० जीवजितना कर्मकर्ताहै उसकाफल
है जो ईश्वरकर्मफल नदेतातोकर्मकाफलकभीनहोता
सकर्मकाफल ईश्वर देताहै उसकातोहोताहै और जि
देता उसकानहीहोता इससे ईश्वर कर्मकाफल देनेमेंका
त् पुरुषकर्माभावेफलानिष्पत्तेः ८ गो० जोकर्मफलदे

मानाहै जोमइन्द्रियभी वृक्षादिकोंमेंहैं क्योंकिमधुरज
दिकोंमें जितनेवृक्षहोतेहैं उनमेंखारा जलडालेंसे सूख
इन्द्रियनहोतातो खारेखारेथामीठेका कैसे जानतेत
न्द्रियभीवृक्षादिकोंमेंहै क्योंकि जैसेकोई मनुष्यसोत ह
अत्यन्तशब्दकरनेसे सुनलेताहै तथा तोपआदिक शब्द
कम्पहोताहै जोश्रोत्रेन्द्रियन होतातो कम्पक्योंहोता क
स्मात्भयङ्करशब्दके सुननेसेमनुष्यपशु पक्षीअधिककम्प
से वृक्षादिकभीकम्पजातेहैं जोवेकहेंकिवायुकेवेगसे वृक्ष
जाताहै अच्छातोमनुष्यादिकोंकाभी वायुकाचेष्टासेजा
ताहै इससेवृक्षादिकोंमेंभी श्रोत्रेन्द्रियहैतथा नासिकाइ
क्योंकि वृक्षोंकारोग भूंकदेनेसेछूट जाताहै जोनासिकेन्द्रि
नाहोतोगन्धकाग्रहण वेनकर्ताइससे नसिकाइन्द्रियभी वृक्ष
है तथात्वचाइन्द्रियभीहै क्योंकिकुमादिनि कमलल ज्या
तहुईमुईआषधि औरसुर्यमुखीआदिक पुष्पोंमेंऔरशीत
वृक्षादिकोंमेंभी जानपडतेहैं क्योंकिशीत तथाअत्यन्त उ
ष्णादिकसेकुमला जातेहैं औरसूखभीजातेहैं इससेतत्तद्
कर्मदूखनमतत्तत् इन्द्रियवृक्षादिकोंमें अवश्यमाननाचा
भमजैनमंप्रदायवालोंको स्थूलगोलकइन्द्रियोंके नहीद
आदि मो इससे जैनलोग इन्द्रियोंको नहीजानसकेपरन्तु
सबबुद्धिमानलोग वृक्षादिकोंमेंभी इन्द्रियजानतेहैं इसमें
समझो औरजहांगो लहैंगा वहांइन्द्रियअवश्यहोंगा क्यों
यणक्रियोंकाजोमेंघात इसीकाजो कहतेहैं जहांजीवहो
फिरकुअवगु होंगो जैनोंकाऐसाभीकहनाहै किताना
मेंकिमभावरनवाना क्योंकिउनमेंबहुत जीव रहतेहैं जैसानार
कएकीवकभीजोउसमेंबैठगोउसकेऊपर सेघावैठगाउसको व
होतोसदासुकुमारभी डालगाउसकापापतालाअवनानेमा
कर्मफलको विहताजीवनवनाताती घड़त्यानतो इससे

नहीसमझा क्योंकिउसतालावकेजलसे असंख्यातजीवसुखी होंगे उसकापुण्य कहांजायगा सोपापके वास्ते तालावकोई नहीबनाता किन्तु जीवोंकेसुखके वास्तेबनातेहैं इससे पाप नहीहोसक्ता परन्तु जिस देशमेंजल नहीमिलताहोय उसदेशमें बनानेसे पुण्यहोता-है जिसदेशमें बहुत जल मिलताहोवै उसदेशमें तडागादिकोंका बनानाव्यर्थहै औरवेबडे २ मंदिरऔरबडे २ घरबनातेहै उनमें क्याजीवनहीमरतेहोंगे सोलाखहांरुपैये मन्दिरादिकोंमें मिथ्या लगादेतेहैं जिनसेकुछसंसारका उपकारनहीहोता और जोउप-कारकीबातहै उसमेंदोषलगातेहैं फिरकहतेहैं किजैनकाधर्मश्रे-ष्ठहै औरइसकेबिनामुक्तिभी किसीकोनहीहोती सोयहबातउन-कीमिथ्याहै क्योंकिऐसीबात औरऐसेकर्मोंसेमुक्तिकभीनहीहोस-क्ती मुक्तितो मुक्तिकेकर्मोंसेसर्वत्रहोतीहै अन्यथानही जितनामूर्ति पूजनचलाहै सोजैनोंसेहीचलाहै यहभीअनुपकारकाकर्महै इससे कुछउपकारनही संसारमेंबिनाअनुपकारके सोजैनोंको बडाभा-रीआग्रहहै जोकोईकुछपुण्य कियाचाहताहै धनाढ्य सोमन्दिर-हीबनादेताहै औरप्रकारका दानपुण्यनहीकर्त्तेहैं उनने जैनगा-यत्रीभी एकबनालिईहै औरएकयतीहोतेहैं उनकोश्वेताम्बर कह-तेहैं दूसराहोताहैदिगम्बर जिसकोमुनिऔर स्रावककहतेहैंउ-नमेंसेढूंढियेलोगमूर्तिपूजन कोनहीमानते औरलोग मानतेहैं उनमें एकश्रीपूज्यहोताहै उसका ऐसा नियमहोताहै किइतना धन जबसेवकलोगदें तबउसकेघरमेंजावें और मुनिदिगम्बरहोते हैं वेभी उनकेघरमें जबजातेहैं तबआगे २ थानबिछातेचलेजाते-हैं औरउनकेमतमें नहोय वह अच्छाभीहोयतो भीउसकीसेवा अ-र्थात् जलतकभीनहीदेते यहउनका पक्षपातसे अनर्थहै किन्तु जो श्रेष्ठहोय उसकी सेवा करनीचाहिये दुष्टकीकभीनही यहसबम-नुष्योंकेवास्ते उचितहै जेढूंढयहोतेहैं उनके केशमें जूआंपडजां-यतो भीनहीनिकालते औरहजामत नहीबनवाते किन्तु लुन

साधु जब आता है तब जैनी लोग उसकी दाढी मोंछ और सिर के बाल सब पनीं चलते हैं जो उसको बहुत पीडा होती है फिर अथवा नेत्र से जल गिरावे तब सब कहते हैं कि यह साधु नहीं भया है क्योंकि इसको शरीर के ऊपर मोह है विचार करना चाहिये कि ऐसी २ पीडा और साधुओं को दुःख देना और उनके हृदय में दया का लेश भी न होना यह उनकी बात बहुत मिथ्या है क्योंकि बालों के नोंचने से कुछ नहीं होता जब तक काम क्रोध लोभ मोह भय शोकादिक दोष हृदय से नहीं नौं चे जायगे यह ऊपर का सब ढोंग है उनमें जितने आचार्य भये हैं उनके बनाये ग्रन्थों को वेद मानते हैं सो अठारह ग्रन्थ हैं तथा महाभारत रामायण पुराण स्मृतियां भी उन लोगों ने अपने मत के अनुकूल ग्रन्थ बना लिये हैं अन्य भगवती गीता ज्ञानचरित्रादिक भी ग्रन्थ नाना प्रकार के बना लिये हैं बहुत संस्कृत में ग्रन्थ हैं और बहुत प्राकृत भाषा में रच लिये हैं उनमें अपने संप्रदाय की पुष्टि और अन्य संप्रदायों का खण्डन कपोलकल्पना से अनेक प्रकार लिखा है जैसे कि जैन मार्ग सनातन है प्रथम सब संसार जैनमार्ग में था परन्तु कुछ दिनों से जैनमार्ग को छोड दिया है लोगों ने सो बडा अन्याय है क्योंकि जैनमार्ग छोडना किसी को उचित नहीं ऐसी २ कथा अपने ग्रन्थों में जैनों ने लिखी हैं सो सब संप्रदाय वाले अपनी २ कथा ऐसी ही लिखते हैं और कहते हैं इसमें प्रायः अपने मत लब्धक लिये बातें मिथ्या २ बना लिई हैं यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥ यावज्जीवेत्सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत्। अग्निहोत्रं त्रयो वेदा त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविका ति बृहस्पतिः। अग्निरुष्णो जलं शीतं समस्पर्शस्तथानिलः॥ केनेदं चित्रितं तस्मात् स्वभावात्तद्व्यवस्थितिः। न स्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः। नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायकाः। अग्निहोत्रं त्रयो वेदा स्त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविका धातृनिर्मिता। पशु श्च

न्निहतःस्वर्गं ज्योतिष्टोमेगमिष्यति ॥ स्वपितायजमानेन तत्रक-
स्मान्नहिंस्यते । मृतानामपिजंतूनां श्राद्धंचेत्तृप्तिकारणम् ॥ गच्छ
तामिहजंतूनां व्यर्थंपाथेयकल्पनम् । स्वर्गःस्थितायदातृप्तिं गच्छे
युस्तत्रदानतः ॥ प्रासादस्योपरिस्थाना मत्रकस्मान्नदीयते । यदि-
गच्छत्परंलोकं देहादेषविनिर्गतः ॥ कस्माद्भूयोनचायाति बन्धुस्ने-
हसमाकुलः । ततश्चजीवनोपायो ब्राह्मणैर्विहितस्त्विह ॥ मृतानां
प्रेतकार्याणि नत्वन्यद्विद्यतेक्वचित् । त्रयोवेदस्यकर्तारो भण्डधूर्त्त-
निशाचराः ॥ जर्फरीतुर्फरीत्यादि पंडितानां वचःस्मृतम् । अश्व-
स्यात्रहिशिश्नन्तु पत्नीग्राह्यंप्रकीर्त्तितम् ॥ भण्डैस्तद्वत्परंचैव ग्रा-
ह्यजातंप्रकीर्त्तितम् । मांसानांखादनंतद्वन्निशाचरसमीरितम् ।
इत्यादिकश्लोक जैनोंनेबनारक्खे हैं और अर्थ तथा काम दोनोंप-
दार्थमानतेहैं लोकसिद्ध जोराजासोईपरमेश्वर औरईश्वरनहीं पृ-
थवी जल अग्नि वायु इन केसंयोगसे चेतनउत्पन्नहोके इनमेंलो
नहोजाताहै और चेतनपृथक्पदार्थनहो ऐसे २ प्राकृतदृष्टान्तदे
कनिर्बुद्धि पुरुषोंकोबहकादेतेहैं जोचारभूतोंकेयोगसे चेतनउत्प-
न्नहोता तो अबभीकोई चारभूतोंकोमिलाके चेतनदेखलादे सो
कभीनहोदेखपड़ेगा इनस्वभावसे जगतकीउत्पत्तिआदिकका उ-
त्तर ईश्वर और सृष्टिकेविषयमें लिखदियाहै वहींदेखलेना भूते-
भ्योमूर्त्युपादन वत्तदुपादनम् इत्यादिक गोतममुनिजीके कियसू-
त्र नास्तिकोंकेमतदेखाने कआस्तेलिखेजातेहैं औरउनकाखण्ड-
नभी सोजानलेना जैसेपृथिव्यादिक भूतोंसेबालु पाषाण गेरुअ-
ञ्जनादिक स्वभावसेकर्त्ताकेबिना उत्पन्नहोतेहैं वैसेमनुष्यादिक-
भीस्वभावसे उत्पन्नहोतेहैं नपूर्वापरजन्म नकर्म औरनउनकासं-
स्कार किन्तु जैसे जलमेंफेन तरंग और बुद्बुदादिक अपने आपसे
उत्पन्नहोतेहैं वैसेभूतोंसे शरीरभीउत्पन्नहोताहै उसमें जीवभी
स्वभावसेउत्पन्नहोताहै उत्तर नसाध्यसमत्वात् २ गो० जैसेशरी-
रकीउत्पत्ति कर्मसंस्कारकेबिना सिद्धमानतेहो वैसेबालुकादिक

स्थूलजितनाजगतहैऔर बुद्ध्यादिसूक्ष्म जितनाजगत्है सो सबअनित्यही जाननाचाहिये उत्तर नानित्यता नित्यत्वात् १३ गो०सबअनित्यनहीहैं क्योंकि सबकीअनित्यता जोनित्यहोगी तो उसके नित्यहोनेसे सब अनित्यनहीभया और जोअनित्यता अनित्यहोगी तो उसके अनित्यहोनेसे सब जगत् नित्यभया इससे सब अनित्यहै हैऐसाजोआपका कहनासो अयुक्तहै फिरभीवह अपने मतको स्थापन करनेलगा तदनित्यत्वमग्नेर्दाह्यं विनाश्यानु विनाशवत् १४ गो० वह जोहमने अनित्यता जगत्कीकही सोभी अनित्यहै क्योंकि जैसेअग्निकाष्ठादिक कानाशकरके अपनेभीनष्टहोजाता है वैसेजगत् कोअनित्यकरके आपभी अनित्यतानष्टहोजातीहै उत्तर नित्यस्याप्रत्याख्यानंयथोपलब्धिव्यवस्थानात् १५ गो० नित्यकाप्रत्याख्यान अर्थात् निषेधकभीनहीहोसक्ता क्योंकि जिसकीउपलब्धिहोतीहै और जोव्यवस्थितपदार्थहै उसकी अनित्यतानहीहोसक्ती जोनित्यहै प्रमाणोंसे और जोअनित्य सोनित्य २ होहोताहै और अनित्य २ होहोताहै क्योंकि परम सूक्ष्मकारण जोहै सोअनित्यकभीनहीहोसक्ता और नित्यकेगुणभीनित्यहैं तथा जो संयोगसे उत्पन्नहोताहै और संयुक्तकेगुण वे सबअनित्यहैं नित्यकभीनहीहोसक्ते क्योंकि पृथकपदार्थोंका संयोग होताहै वेफिरभी पृथक्होजातेहैं इसमेंकुछसंदेहनही छःठहानास्तिकयहहैकि सर्वंनित्यंपंचभूतनित्यत्वात् १६ गो० जितना आकाशादिक यहजगतहै जोकुछइन्द्रियोंसे स्थूल वा सूक्ष्मजानपड़ताहै सोसबनित्यही है पांचभूतोंके नित्यहोनेसे क्योंकि पांचभूतनित्यहैं उनसे उत्पन्न भयाजो जगत्सोभीनित्यहीहोगा उत्तर नोत्पत्तिविनाशकारणोपलब्धेः १७ गो० जिसकाउत्पत्तिकारण देखपड़ताहै और विनाशकारण वह नित्यकभीनहीहोसक्ता इत्यादिक समाधान न्यायदर्शनमेंलिखेहैं सोदेखलेना सातवांनास्तिक कामतयहहै कि सर्वंपृथक्भाव लक्षणपृथक्त्वात् १८ गो० सबपदार्थ जगत्में पृथ-

क् २ होहैं क्योंकि घटपटादिक पदार्थोंकेपृथक् २ भिन्नदेखपड़ते हैं इससे सबवस्तु पृथक् २ होहैं एकनहो उत्तर नास्तिकका पांचवा सर्वाभावानिष्पत्तेः १९ गो ० यहबात आपकीअयुक्तहै क्योंकि घड़ेमें गंधादिक गुण हैं और मुख आदिक घड़े के अवयव भी अनेक पदार्थों में एक पदार्थ युक्त प्रत्यक्ष देख पड़ता हैं इससे सबपदार्थ पृथक् २ हैं ऐसाजो कहनासो आपका व्यर्थहै अठवां नास्तिकका मतयहहै कि सर्वमभावोभाव ष्वितरेतराभावसिद्धेः २० गो ० यावत् जगतहै सोसब अभावहीहै क्योंकि घड़ेमें वस्त्रकाअभाव और वस्त्रमें घड़ेकाअभाव तथा गायमें घोड़ेका और घोड़ेमें गायकाअभावहै इससे सबअभावहीहै उत्तर नस्वभावसिद्धे भावानाम् २१ गो ० सबअभाव नहीहै क्योंकि अपनेमें अपना अभाव कभीनहीं होता जैसे घड़ेमें घड़ेका और घोड़ेमें घोड़ेका अभाव नहीं होता है और जो अभावहोता तो उसकीप्राप्ति और उससे व्यवहारसिद्धि कभी नहोहोती इससेसबअभावहै ऐसाजोकहनासो व्यर्थ है क्योंकि आपहीअभावहो फिर आपकहते और सुनतेहोसो कैसेबनता सो कभीनहींबनता ऐसे २ बादविवाद मिथ्याजेकर्त्तेहैं वेनास्तिक गिनेजातेहैं सोजैनसंप्रदायमें अथवा किसीसंप्रदायमेंऐसामतवाला पुरुषहोयउसको नास्तिकहीजाननाजैनलोगों मेंप्रायःइसप्रकारकेवादहैं वेसबमिथ्याही सज्जनोंको जाननाचाहिये यजमानकोपशु अग्निकोपकड़ै यहबातमिथ्याहैतथा संसारमें राजाजोहै सोईपरमेश्वरहै यहभीबात उनकीमिथ्याहैक्योंकिमनुष्यक्यापरमेश्वर कभीहोसक्ताहै धर्मकोबड़ानसमझना औरअर्थतथा कामकोही उत्तमसमझनायहभीउनकीबातमिथ्याहैइत्यादिक बहुत उनकेमतमेंमिथ्या २ कल्पनाहैउनकोसज्जनलोगकभीनमानैं

इतिश्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृतेसत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते द्वादशःसमुल्लासः संपूर्णः ॥ १२ ॥

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक . 503
दयानन्द महिला मह